



भारत का राजपत्र The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-अ.-19052025-263193
CG-DL-E-19052025-263193

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 138]
No. 138]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, मई 15, 2025/ वैशाख 25, 1947
NEW DELHI, THURSDAY, MAY 15, 2025/ VAISAKHA 25, 1947

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
(वाणिज्य विभाग)
(व्यापार उपचार महानिदेशालय)

अंतिम जांच परिणाम

नई दिल्ली, 15 मई, 2025

मामला स. एडी (ओआई) 16/2024

विषय: यूरोपीय संघ के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 'किसी भी रूप में थीरम' के आयात के संबंध में पाटनरोधी जांच।

क. मामले की पृष्ठभूमि

फा. सं. 6/18/2024-डी.जी.टी.आर.-समय-समय पर यथासंशोधित सीमा प्रशुल्क

अधिनियम, 1975 (जिसे यहां आगे "अधिनियम" कहा गया है) और उसकी समय समय पर यथा-संशोधित सीमा प्रशुल्क (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन और संग्रहण तथा क्षति का निर्धारण)

नियमावली, 1995 (जिसे आगे यहां "नियमावली" कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए,

1. स्वरूप केमिकल्स प्राइवेट लिमिटेड (जिसे आगे “घरेलू उद्योग” अथवा “आवेदक” कहा गया है) ने यूरोपीय संघ (जिसे आगे “संबद्ध देश” कहा गया है) से किसी भी रूप में थिरम (जिसे आगे “विचाराधीन उत्पाद” या “पीयूसी” या “संबद्ध सामान” कहा गया है) के आयात के संबंध में पाटनरोधी जांच शुरू करने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे “प्राधिकारी” कहा गया है) के समक्ष विधिवत प्रमाणित आवेदन दायर किया है। इसके अतिरिक्त, इस आवेदन-पत्र का अंबाचेम इंडस्ट्रीज और सुदामा केमटेक प्राइवेट लिमिटेड ने समर्थन किया है।
2. प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा प्रस्तुत प्रथम दृष्टया साक्ष्य के आधार पर, भारत के राजपत्र-असाधारण में प्रकाशित अधिसूचना संख्या 6/18/2024-डीजीटीआर दिनांक 29 जून 2024 के माध्यम से एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया, जिसमें संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध सामानों के कथित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और प्रभाव का निर्धारण करने तथा पाटनरोधी शुल्क, जो यदि लगाया जाए और घरेलू उद्योग को तथाकथित क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी, की राशि की सिफारिश करने के लिए नियमावली के नियम 5 के साथ पठित अधिनियम की धारा 9क के अनुसार संबद्ध जांच शुरू की गई।

ख. प्रक्रिया

3. जांच के संबंध में नीचे वर्णित प्रक्रिया अपनाई गई है:
 - क. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 5(5) के अनुसार जांच आरंभ करने से पहले वर्तमान पाटनरोधी आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत में संबद्ध देश के दूतावास को अधिसूचित किया।
 - ख. प्राधिकारी ने संबद्ध देश से संबद्ध सामानों के आयात के संबंध में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित दिनांक 29 जून 2024 को एक सार्वजनिक नोटिस जारी की।
 - ग. प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध देश के दूतावास, संबद्ध देश के ज्ञात उत्पादकों और निर्यातकों, भारत में ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पत्रों के अनुसार जांच की शुरुआत की अधिसूचना की प्रति भेजी। हितबद्ध पक्षकारों से कहा गया कि वे जांच की शुरुआत की अधिसूचना में निर्धारित स्वरूप और तरीके में संगत सूचना उपलब्ध कराएं और जांच की शुरुआत की अधिसूचना में निर्धारित समय सीमा के भीतर लिखित रूप में अपने ज्ञात अनुरोध उपलब्ध कराएं।
 - घ. प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 6(3) के अनुसार आवेदक द्वारा दायर आवेदन के अगोपनीय पाठ की एक प्रति ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों तथा भारत में संबद्ध देश के दूतावास को उपलब्ध कराई।
 - ड. भारत में संबद्ध देश के दूतावास से भी अनुरोध किया गया कि वे निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली के उत्तर निर्धारित समय-सीमा के भीतर प्रस्तुत करने की सलाह दें।
 - च. प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार यूरोपीय संघ में निम्नलिखित ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को निर्यातक प्रश्नावली भेजी:

क्र.सं.	संबद्ध देश में उत्पादकों/निर्यातकों का नाम
i.	तामिन्को बी.वी.
ii.	बायर एजी
iii.	आईपीटी पेरगांडे जीएमबीएच

- छ. उपर्युक्त के प्रत्युत्तर में, यूरोपीय संघ के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने उत्तर नहीं दिया है तथा निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दायर नहीं किया है।

- ज. प्राधिकारी ने भारत में विचाराधीन उत्पाद के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को भी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने हुए प्रश्नावली भेजी-:

क्र.सं.	भारत में विचाराधीन उत्पाद के प्रयोक्ताओं/आयातकों के नाम
i.	बेयर वापी प्राइवेट लिमिटेड/ बेयर क्रॉप साइंस लिमिटेड
ii.	इंडोफिल इंडस्ट्रीज लिमिटेड
iii.	मीनाक्षी एग्रो केमिकल्स
iv.	जेएमएफ परफॉरमेंस मैटेरियल्स प्राइवेट लिमिटेड
v.	क्रॉप केयर फेडरेशन ऑफ इंडिया
vi.	बल्क ड्रग्स मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन (इंडिया)
vii.	इंडियन ड्रग्स मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन

- झ. जारी प्रश्नावली के उत्तर में, मीनाक्षी एग्रो केमिकल्स ने प्रयोक्ता प्रश्नावली के उत्तर दायर किए हैं।
- ञ. इसके अतिरिक्त, यूरोपीय संघ से एक अनुरोध प्राप्त हुआ था और उसे अंतिम जांच परिणामों में हल कर दिया गया है।
- ट. जिन निर्यातकों, विदेशी उत्पादकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने इस जांच के संबंध में कोई उत्तर नहीं दिया है या संगत सूचना नहीं दी है, उन्हें असहयोगी हितबद्ध पक्षकार माना गया है।
- ठ. प्राधिकारी ने सभी ज्ञात उत्पादकों और निर्यातकों, आयातकों और आवेदक को आर्थिक हित प्रश्नावली जारी की। आर्थिक हित प्रश्नावली को प्रशासनिक लाइन मंत्रालय के साथ भी साझा किया गया। केवल आवेदक ने ही आर्थिक हित प्रश्नावली दाखिल की है। किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने आर्थिक हित प्रश्नावली दायर नहीं की है।
- ड. प्राधिकारी को गुजरात बीज उद्योग संघ, बीज विक्रेता संघ, महाराष्ट्र बीज उद्योग संघ से पत्र प्राप्त हुए थे, जिसमें संबद्ध जांच को समाप्त करने का अनुरोध किया गया था। वर्तमान अंतिम जांच परिणामों में उनके अनुरोधों पर विचार किया गया है।
- ढ. वर्तमान जांच के उद्देश्य के लिए जांच की अवधि (पीओआई) 1 जनवरी 2023 से 31 दिसंबर 2023 (12 महीने) है। क्षति विश्लेषण अवधि में 2020-21, 2021-22, 2022-23 और जांच की अवधि शामिल है।
- ण. हितबद्ध पक्षकारों को जांच शुरू होने की तारीख से 30 दिनों की अवधि के भीतर विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र और पीसीएन प्रस्तावित करने, यदि अपेक्षित हों, पर अपनी टिप्पणियां देने का अवसर प्रदान किया गया था। इसके बाद, विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र और पीसीएन पद्धति पर चर्चा करने के लिए 14 अगस्त 2024 को एक बैठक आयोजित की गई।
- त. हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त अनुरोधों के आधार पर, विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र और जांच के लिए पीसीएन पद्धति 18 अक्टूबर 2024 को अधिसूचित की गई।
- थ. सभी हितबद्ध पक्षकारों की सूची डीजीटीआर वेबसाइट पर अपलोड की गई तथा उन सभी से अनुरोध किया गया कि वे अपने अनुरोधों का अगोपनीय रूपांतरण अन्य सभी हितबद्ध पक्षकारों को ईमेल करें।
- द. नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार, प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों को 7 फरवरी 2025 को हाइब्रिड मोड में आयोजित सार्वजनिक सुनवाई में मौखिक रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया। मौखिक सुनवाई में अपने विचार प्रस्तुत करने वाले पक्षकारों से अनुरोध किया

- गया कि वे मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों के लिखित अनुरोध दाखिल करें, उसके बाद यदि कोई हो तो प्रत्युत्तर दायर करें।
- ध. गोपनीय आधार पर हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रदान की गई सूचना की गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में जांच की गई। संतुष्ट होने पर, प्राधिकारी ने जहां भी आवश्यक था, गोपनीयता के दावों को स्वीकार कर लिया है और ऐसी सूचना को गोपनीय माना गया है तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट नहीं की गई है। जहां भी संभव हुआ, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षकारों को गोपनीय आधार पर दायर की गई सूचना के पर्याप्त अगोपनीय रूपांतर प्रदान करने का निर्देश दिया गया।
- न. डीजी सिस्टम से जांच की अवधि सहित क्षति अवधि के लिए संबद्ध वस्तुओं के आयातों का लेन-देन-वार ब्यौरा उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था। वह प्राधिकारी को प्राप्त हो गया था और इस अंतिम जांच परिणाम में इस पर विचार किया गया है।
- प. प्राधिकारी ने आवेदक और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना का सत्यापन वर्तमान जांच के प्रयोजनों के लिए आवश्यक समझी गई सीमा तक किया।
- फ. क्षति रहित कीमत (जिसे आगे एनआईपी कहा गया है) का निर्धारण, संबद्ध सामानों की भारत में उत्पादन लागत और उचित लाभ के आधार पर किया गया है, जो आवेदक द्वारा सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों (जीएएपी) और पाटनरोधी नियमावली, 1995 के अनुबंध III के आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना पर आधारित है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।
- ब. प्राधिकारी ने 13 अप्रैल 2025 को सभी हितबद्ध पक्षकारों को केंद्र सरकार को अंतिम सिफारिशें करने के लिए विचाराधीन सभी आवश्यक तथ्यों से युक्त प्रकटन विवरण परिचालित किया। प्राधिकारी ने संगत समझी गई सीमा तक इन अंतिम जांच परिणामों में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा की गई सभी प्रकटन-पश्चात टिप्पणियों की जांच की है। कोई भी अनुरोध जो केवल पिछले अनुरोध का पुनरावृत्ति था और जिसकी प्राधिकारी द्वारा पर्याप्त रूप से जांच की गई थी, उसे संक्षिप्तता के लिए दोहराया नहीं गया है।
- भ. प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए सभी तर्कों और उपलब्ध कराई गई सूचना पर इस सीमा तक विचार किया है कि वे साक्ष्यों से समर्थित हैं और वर्तमान जांच के लिए संगत माने गए हैं।
- म. इस अंतिम जांच परिणाम में "****" एक हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर दी गई सूचना को तथा नियमावली के तहत प्राधिकारी द्वारा मानी गई सूचना दर्शाते हैं।
- य. संबद्ध जांच के लिए प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई विनिमय दर 1 अमेरिकी डॉलर = 83.52 रुपए है।

ग. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

4. जांच की शुरुआत के स्तर पर, विचाराधीन उत्पाद को निम्नानुसार परिभाषित किया गया था:

"3. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद किसी भी रूप में थाइरम है, जिसमें तकनीकी और निर्माण स्वरूप शामिल है।

4. थिरम का उपयोग खेत में फसल को नुकसान से बचाने और भंडारण या परिवहन में फसलों को खराब होने से बचाने के लिए कीटनाशक के रूप में किया जाता है। थिरम का उपयोग विभिन्न प्रकार के फफूंद रोगों से बीज, अखरोट, फल और मशरूम कीटाणुनाशक के रूप में भी किया जाता है। इसके अलावा, इसका उपयोग खरगोशों, कृन्तकों और हिरणों द्वारा फलों के पेड़ों और सजावटी

पौधों को नुकसान से बचाने के लिए पशु विकर्षक के रूप में किया जाता है। थिरम का उपयोग मानव खुजली के उपचार में, सनस्क्रीन के रूप में और त्वचा पर सीधे लगाए जाने वाले जीवाणुनाशक के रूप में या साबुन में शामिल करके किया जाता है।

5. विचाराधीन उत्पाद प्रशुल्क वर्गीकरण के शीर्षक 3808 92 30 के तहत सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के अध्याय 38 के तहत वर्गीकृत है। विचाराधीन उत्पाद का एक समर्पित वर्गीकरण है। सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और यह जांच के क्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।”

ग.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध

5. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए हैं।

- क. थिरम निर्माण को विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र से बाहर रखा जाना चाहिए।
- ख. थिरम फॉर्म्यूलेशन न तो आयात किया जाता है और न ही भारत में आयात किया जा सकता है और जो सामान आयात नहीं किया जाता है, उन्हें इस क्षेत्र में शामिल नहीं किया जा सकता। इसके अलावा, प्रवचन के प्रावधानों को लागू नहीं किया जा सकता क्योंकि वे केवल तभी लागू होते हैं जब शुल्क लगाया जाता है।
- ग. निर्माण के आयात के लिए एक विशिष्ट लाइसेंस की आवश्यकता होती है। संपूर्ण निर्माण श्रेणी के लिए एक भी लाइसेंस नहीं है।
- घ. किसी भी भारतीय आयातक या अन्य विदेशी आपूर्तिकर्ताओं (यूरोपीय आपूर्तिकर्ताओं सहित) के पास थिरम निर्माण के लिए सीआईबीआरसी पंजीकरण नहीं है।
- ङ. लाइसेंस प्राप्त करना 3 से 4 वर्षों तक चलने वाली एक महंगी और समय लेने वाली प्रक्रिया है। इसमें दो वर्षों में दो मौसमों में परीक्षण रिपोर्ट प्रस्तुत करना शामिल है, जिसमें अंतिम उत्पाद अनुमोदन सीआईबीआरसी के कठोर मूल्यांकन और निर्णय पर निर्भर करता है, जो अक्सर इच्छित बीज के लिए विशिष्ट होता है।
- च. यह अनुमान लगाना कि थिरम टेक्निकल पर शुल्क लगाए जाने पर थिरम टेक्निकल के उपयोगकर्ता थिरम निर्माण पर चले जाएंगे, भ्रामक है।
- छ. थिरम टेक्निकल और निर्माण को नियमावली के नियम 2(घ) के अनुसार समान वस्तु नहीं माना जा सकता क्योंकि वे तकनीकी और व्यावसायिक रूप से प्रतिस्थापनीय नहीं हैं।
- ज. थिरम टेक्निकल शुद्ध, सक्रिय है और इसका सीधे बीजों पर उपयोग नहीं किया जा सकता है। थिरम निर्माण में अच्छे सर्फेक्टेंट हैं और सीबीआईसी की मंजूरी के बाद इसे भारत में बेचने/निर्माण करने की अनुमति है। यह विभिन्न प्रकार के फॉर्मूलों में उपलब्ध है, जैसे डब्ल्यूएस, डीएस, एफएस और एफएफ।
- झ. निर्माण तकनीकी को एक उपयुक्त कम संकेन्द्र उत्पाद में रूपांतरित करना है और इसमें पाउडर निर्माण के लिए न्यूनतम 15% और एफएस निर्माण के निर्माण के लिए 40% से अधिक लागत आती है, क्योंकि इसमें डायनो मिलों के माध्यम से पीसने, चिलिंग प्रक्रिया, जनशक्ति, सर्फेक्टेंट और वाहक की आवश्यकता होती है।
- ञ. 28 अप्रैल 1992 को सब्सिडी और प्रतिकारी उपायों संबंधी समिति द्वारा अपनाई गई पैनल रिपोर्ट में - वाइन और अंगूर उत्पादों के संबंध में - संयुक्त राज्य अमेरिका - उद्योग की परिभाषा, यह निष्कर्ष निकाला गया था कि चूंकि दो पृथक उद्योग वाइन ग्रेप उत्पादकों और वाइनग्रीज के लिए मौजूद थे, अतः उन दोनों को समान उद्योग नहीं कहा जा सकता। यहां भी यही सिद्धांत लागू होना चाहिए।

- ट. आवेदक ने हॉट और कोल्ड रोल्ड उत्पादों की संयुक्त जांच पर भरोसा किया है, इस तथ्य की अनदेखी करते हुए कि इन उत्पादों के लिए अलग-अलग जांच भी की गई थी और निष्कर्ष निकाला गया था। अर्द्ध-न्यायिक निकायों द्वारा निर्णय मूल मामले में शामिल विशिष्ट पक्षकारों पर ही बाध्यकारी हैं।
- ठ. चूंकि प्रतिवादी आवेदक उद्योग द्वारा उल्लिखित किसी भी पिछली जांच में पक्षकार नहीं था, इसलिए प्राधिकारी के लिए यहां उठाए गए मुद्दों से निपटने या उनका समाधान करने का कोई अवसर नहीं था।
- ड. आवेदक ने क्षति जांच अवधि के दौरान प्रतिवादी से आयातित संबद्ध सामानों की खरीद, सीआईबीआरसी के साथ थिरम निर्माण के पंजीकरण की आवश्यकता से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी को रोक रखा है और वर्तमान में किसी भी विदेशी आपूर्तिकर्ता के पास भारत को थिरम निर्माण निर्यात करने का लाइसेंस नहीं है।
- ढ. एमिसुलब्रोम, एज़ोक्सीस्ट्रोबिन, ऑरियोफंगिन, बिटरटानो, कैप्टन आदि कुछ प्रतिस्थापन हैं जो घरेलू बाजार में थिरम की जगह ले सकते हैं।

ग.2 आवेदक के अनुरोध

6. आवेदक ने विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- क. वर्तमान में यूरोपीय संघ से निर्माण के रूप में थिरम का आयात नहीं किया जाता है। उच्च जल सामग्री के कारण, उच्च शिपिंग लागत के कारण निर्माण के रूप में थिरम का परिवहन करना वाणिज्यिक रूप से अर्थक्षम नहीं है। यूरोपीय संघ से केवल तकनीकी रूप में थिरम का आयात किया जाता है।
- ख. थिरम तकनीकी को क्षेत्र में 9-10% की वृद्धिशील लागत वहन करके कम सांद्रता (निर्माण) में परिवर्तित किया जा सकता है।
- ग. यदि निर्माण को उपायों के क्षेत्र से बाहर रखा जाता है, तो पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद निर्माण का आयात मूल्य तकनीक की कीमत से कम हो जाएगा।
- घ. आवेदक द्वारा उत्पादित उत्पाद और संबद्ध देश से आयात समान विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रियाओं और उपयोगों को साझा करते हैं, जिससे वे वाणिज्यिक रूप से परस्पर परिवर्तनीय हो जाते हैं।
- ड. थिरम तकनीकी रासायनिक यौगिक का केंद्रित रूप है, जिसका उपयोग निर्माण तैयार करने के लिए आधार के रूप में किया जाता है। थिरम निर्माण उपयोग के लिए तैयार उत्पाद है जिसमें सक्रिय घटक के रूप में थिरम होता है, लेकिन आवेदन के लिए पतला या तैयार रूप में होता है।
- च. डब्ल्यूटीओ पाटनरोधी करार में कोई विशेष प्रावधान नहीं है जो विचाराधीन उत्पाद के निर्धारण के लिए मापदंडों का प्रावधान करता है।
- छ. थिरम का स्वतंत्र उपयोग नहीं है और इसे अनिवार्य रूप से फॉर्मुलेशन में संसाधित किया जाना चाहिए।
- ज. थिरम को फॉर्मुलेशन में बदलने में चाइना क्ले, एस.सी.एम.सी., सनइस्पर्स जैसे कम लागत वाले सॉल्वेंट्स के साथ सरल तनुकरण शामिल है, जिससे यह एक छोटी वृद्धिशील प्रक्रिया बन जाती है। फॉर्मुलेशन की कुल कच्चे माल की लागत में, अकेले तकनीकी लागत 90-95% होती है।
- झ. जबकि 1 एमटी थिरम का औसत उत्पादन समय *** घंटे है, निर्माण के मामले में समय केवल *** घंटे है।
- ञ. तकनीक के मामले में प्रति इकाई निवेश *** रुपये प्रति एमटी से अधिक है, जबकि निर्माण के मामले में प्रति इकाई निवेश *** रुपये प्रति एमटी के क्षेत्र में है।

- ट. यदि बाजार से खरीदे गए अन्य कच्चे माल की लागत को छोड़ दिया जाए, तो अकेले तकनीक की लागत निर्माण की लागत का लगभग 90% है। तकनीक से निर्माण के बीच मूल्य संवर्धन 0-10% है।
- ठ. थिरम के सभी रूपों को क्षेत्र में शामिल किया जाना चाहिए; अन्यथा, आयात तकनीकी रूप से निर्माण में स्थानांतरित हो जाएगा।
- ड. यूरोपीय संघ में प्रमुख उत्पादक विचाराधीन उत्पाद के दोनों रूपों की आपूर्ति कर सकता है और इसलिए, दोनों को शामिल करना आवश्यक है।
- ढ. विभिन्न पिछली जांचों में, प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद और उसके मध्यवर्ती या आगे के संसाधित रूपों, दोनों को एक ही क्षेत्र में शामिल किया है।
- ण. वैश्विक स्तर पर विभिन्न प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र में उत्पादों की विस्तृत शृंखला को शामिल करते हैं। यूएसआईटीसी ने 2,4-डी के आयात में अपनी जांच के क्षेत्र का विस्तार करते हुए 2,4-डी युक्त सभी शाकनाशियों को शामिल कर लिया, जिसमें 2,4-डी से बने लगभग 1,500 उत्पाद शामिल हैं।
- त. सीवीपी-23 और थैलोसाइनिन पिगमेंट की जांच में, अमेरिका और चीन ने इन मध्यवर्ती उत्पादों का कोई प्रत्यक्ष निर्यात न होने के बावजूद विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र में उत्पादों के मध्यवर्ती और तैयार दोनों रूपों को शामिल किया है।
- थ. उत्पाद का आयात मुक्त श्रेणी में आता है। यदि उपयोगकर्ता या आयातक तकनीकी के लिए लाइसेंस प्राप्त कर सकता है, तो वह निर्माण के लिए भी लाइसेंस प्राप्त कर सकता है।
- द. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने यह नहीं दर्शाया है कि तकनीकी के लिए लाइसेंस प्राप्त करना असंभव है।
- ध. यह तथ्य कि सूत्रकार के पास व्यापक उत्पाद पोर्टफोलियो है, यह दर्शाता है कि सूत्रीकरण न तो एक जटिल तकनीक है और न ही एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, बल्कि केवल एक तकनीकी रूप को सूत्रीकरण के रूप में परिवर्तित करना है ताकि इसका उपयोग उपभोक्ताओं द्वारा किया जा सके।
- न. यदि तकनीकी और निर्माण के लिए अलग-अलग लाइसेंसिंग आवश्यकताएं हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि उत्पाद अलग है।
- प. किसी भी मामले में क्षति विश्लेषण के लिए निर्माण को शामिल करना आवश्यक है, क्योंकि तकनीकी फॉर्म के आयात से निर्माण को नुकसान पहुंचा है। यह निर्माण में हुई क्षति है जिसने बदले में तकनीकी को प्रभावित किया है।
- फ. विचाराधीन उत्पाद की कीमत बाजार में उपलब्ध अन्य "प्रतिस्थापनों" की तुलना में बहुत कम है। हितबद्ध पक्षकार ने यह सिद्ध नहीं किया है कि ये उत्पाद विचाराधीन उत्पाद के तकनीकी और वाणिज्यिक विकल्प हैं।
- ब. जिन उत्पादों को "प्रतिस्थापन" के रूप में दावा किया गया है, वे थिरम निर्माण की तुलना में काफी अधिक कीमत पर उपलब्ध हैं। कुछ उत्पादों को "प्रतिस्थापन" के रूप में दावा किया गया है, लेकिन आवेदक की समझ से इन उत्पादों का कोई निर्माता नहीं है।

ग.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

7. जांच की शुरुआत के समय, विचाराधीन उत्पाद को "किसी भी रूप में थिरम माना जाता था, जिसमें उसका तकनीकी और निर्माण रूप भी शामिल है"।
8. यह नोट किया जाता है कि थिरम का उपयोग फसल क्षति को रोकने के लिए कीटनाशी के रूप में व्यापक रूप से किया जाता है। थिरम का उपयोग विभिन्न प्रकार के फंगल रोगों से बीज, अखरोट, फल और

मशरूम कीटाणुनाशक के रूप में भी किया जाता है। इसके अलावा, इसका उपयोग खरगोशों, कृन्तकों और हिरणों द्वारा फलों के पेड़ों और सजावटी पौधों को नुकसान से बचाने के लिए एक पशु विकर्षक के रूप में किया जाता है। थिरम का उपयोग मानव खुजली के उपचार में, सनस्क्रीन के रूप में और त्वचा पर सीधे लगाए जाने वाले जीवाणुनाशक के रूप में या साबुन में शामिल करके किया जाता है।

9. विचाराधीन उत्पाद को प्रशुल्क वर्गीकरण के शीर्ष 3808 92 30 के तहत सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के अध्याय 38 के तहत वर्गीकृत है। विचाराधीन उत्पाद का एक समर्पित वर्गीकरण है। सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और यह जांच के क्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।
10. प्राधिकारी ने प्रस्तावित पीसीएन पद्धति और विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र पर हितबद्ध पक्षकारों से टिप्पणियाँ आमंत्रित कीं। इसके बाद, प्राधिकारी ने पीसीएन पद्धति और विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र को अंतिम रूप देने के लिए 14 अगस्त 2024 को सभी हितबद्ध पक्षकारों के साथ बैठक की।
11. प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए अनुरोधों पर विचार करने के बाद 18 अक्टूबर 2024 के नोटिस के माध्यम से निम्नलिखित पीसीएन कोड अधिसूचित किए।

क्र.सं.	पीसीएन मापदंड	पीसीएन कोड
1	थिरम तकनीक	'टीटी'
2	थिरम फार्मूलेशन	'टीएफ'

12. हितबद्ध पक्षकारों ने वर्तमान जांच के क्षेत्र में थिरम निर्माण को शामिल करने पर आपत्ति जताई है, मुख्य रूप से इस आधार पर कि इसे यूरोपीय संघ से आयात नहीं किया गया है और भारत में विनियामक अपेक्षाओं के कारण इसे आयात नहीं किया जा सकता है।
13. प्राधिकारी को यह उजागर करना व्यावहारिक लगता है कि 'संबंधित उत्पाद' का क्षेत्र सीधे जांच के उद्देश्यों और प्रभावशीलता को प्रभावित करता है। एक अत्यधिक व्यापक उत्पाद दायरा अनुचित संरक्षण को जन्म दे सकता है और जांच प्रक्रिया में अनावश्यक जटिलताएं ला सकता है। इसके विपरीत, एक अत्यधिक संकीर्ण दायरा घरेलू बाजार में हानिकारक पाटन के मुद्दे को क्षतिकारक पाटन के मुद्दे को हल करने में कमी ला सकता है और इसके परिणामस्वरूप निरंतर क्षति हो सकती है, क्योंकि आयातक या प्रयोक्ता लगाए गए उपायों को की प्रवंचना कर सकते हैं। इन उद्देश्यों पर विचार करते हुए, प्राधिकारी अब निम्नलिखित प्रमुख मुद्दों को हर करेंगे।
14. तकनीकी विशेषताएं, उत्पाद के तकनीकी और निर्माण रूप के बीच अनुप्रयोग और संबंध:- यह निर्विवाद है कि उत्पाद की आवश्यक तकनीकी विशेषताएं इसके तकनीकी रूप में निहित हैं। हालाँकि, अकेले तकनीकी रूप का कोई प्रत्यक्ष उपयोग या अनुप्रयोग नहीं है और यह बिना किसी निर्माण में बदले अपने इच्छित कार्य को पूरा नहीं कर सकता है। जबकि तकनीकी रूप में मुख्य तकनीकी गुण समाहित होते हैं, यह निर्माण ही है जो इच्छित कार्यात्मक प्रदर्शन प्रदान करता है। तकनीकी रूप अपने आप में उपयोग करने योग्य नहीं है; इसका एकमात्र उद्देश्य निर्माण में परिवर्तित होना है।
15. वृद्धिशील या विशिष्ट विनिर्माण प्रक्रिया-तकनीकी रूप के उत्पादन में संयंत्र और उपकरण, निवेश, कुशल श्रम और उत्पादन विशेषज्ञता सहित महत्वपूर्ण तकनीकी इनपुट शामिल हैं। दूसरी ओर, थिरम तकनीकी को निर्माण में परिवर्तित करने में मुख्य रूप से सॉल्वेंट्स का उपयोग करके एक सरल कमजोर पड़ने की प्रक्रिया शामिल होती है। इस प्रकार, तकनीकी से निर्माण में परिवर्तन की प्रक्रिया को वृद्धिशील माना

जाता है और विचाराधीन उत्पाद से निर्माण स्वरूप को बाहर करना व्यापार उपचार उपाय के उद्देश्य को कमजोर करता है।

16. आयात योग्यता: - हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि उत्पाद का निर्माण स्वरूप न तो आयात किया जाता है और न ही आयात योग्य है। तथ्य यह है कि निर्माण के आयात में उच्च परिवहन लागत शामिल हो सकती है, इसका मतलब यह नहीं है कि यह आयात योग्य नहीं है। संबद्ध देश से निर्माण के आयात की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है। पाटनरोधी शुल्क के क्षेत्र से निर्माण को बाहर रखने से संबंधित देश से निर्माण का प्रत्यक्ष निर्यात हो सकता है, जिससे उत्पाद की पाटन के खिलाफ घरेलू उद्योग को उपाय प्रदान करने की पूरी कवायद का उद्देश्य ही समाप्त हो जाएगा।
17. लाइसेंसिंग: - आयात के लिए विशिष्ट लाइसेंस की आवश्यकता के संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि केवल लाइसेंस की आवश्यकता का अर्थ यह नहीं है कि उत्पाद का आयात नहीं किया जा सकता है या भविष्य में आयात नहीं किया जा सकता है। लाइसेंसिंग आवश्यकताएं और मानदंड परिवर्तन के अधीन हैं और व्यापार उपाय कार्रवाइयों से स्वतंत्र हैं। प्राधिकारी जांच के लिए उन्हें ध्यान में रखना उचित नहीं समझते हैं।
18. उपर्युक्त के मद्देनजर, प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र तकनीकी और निर्माण रूप सहित किसी भी रूप में थाइरम है।
19. भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित और संबंधित देश से आयातित विचाराधीन उत्पाद भौतिक और रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्यों और उपयोगों, उत्पाद विनिर्देशों, कीमत निर्धारण, वितरण और विपणन और सामानों के प्रशुल्क वर्गीकरण जैसी विशेषताओं के संदर्भ में तुलनीय हैं। ये दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं और उपभोक्ता इनका परस्पर परिवर्तनीय रूप से प्रयोग कर सकते हैं। यह निष्कर्ष निकाला गया है कि आवेदक द्वारा उत्पादित सामान संबद्ध देश से आयातित विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तु है।

घ. घरेलू उद्योग का क्षेत्र और आधार

घ.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

20. घरेलू उद्योग के क्षेत्र और उसके आधार के संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

क. आवेदक जांच अवधि के दौरान आयातित थिरम टेक्निकल की खरीद में शामिल रहा है।

घ.2 घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

21. घरेलू उद्योग के क्षेत्र और उसके आधार के संबंध में आवेदक ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- क. आवेदक ने कच्चे माल की आपूर्ति की कमी के कारण विगत में भी घरेलू बाजार से तकनीकी रूप में थिरम खरीदा था।
- ख. आवेदक ने जांच अवधि में कोई खरीद नहीं की है।
- ग. आवेदक का कुल भारतीय उत्पादन में अकेले 70% हिस्सा है। आवेदक का भारत में समर्थकों के साथ संपूर्ण उत्पादन है।
- घ. निर्माण के अन्य उत्पादक भी हैं, लेकिन इन उत्पादकों को कुल भारतीय उत्पादन का पता लगाने के लिए नहीं माना जा सकता है। ये फॉर्मूलेटर विचाराधीन उत्पाद के एक रूप का आयात कर रहे हैं और इसे दूसरे रूप में बनाने के लिए संसाधित कर रहे हैं।
- ड. तकनीकी के आयात और उत्पादन को पहले से ही मांग की गणना में शामिल किया गया है। इन संस्थाओं के उत्पादन पर विचार करने से दोहरा लेखांकन होगा।

- च. चूंकि इन पक्षकारों ने विचाराधीन उत्पाद का आयात किया है, इसलिए उन्हें पात्र घरेलू उद्योग नहीं माना जा सकता है। तकनीकी को निर्माण में बदलना एक छोटी वृद्धिशील प्रक्रिया है जिसमें लगभग 10% का मूल्यवर्धन होता है।
- छ. चूंकि तकनीकी के स्तर पर प्रमुख विनिर्माण प्रक्रिया और निवेश की आवश्यकता होती है, इसलिए यह उत्पादक के लिए अनिवार्य है कि वह पात्र घरेलू उत्पादक माने जाने के लिए तकनीकी का उत्पादन करें।

घ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

22. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग निम्नलिखित रूप में परिभाषित है:

“(ख) “घरेलू उद्योग” का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा ऐसे उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है सिवाए उस स्थिति के जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं अथवा वे स्वयं उसके आयातक होते हैं, तो ऐसे मामले में “घरेलू उद्योग” का अर्थ शेष उत्पादकों के संदर्भ में लगाया जा सकता है।”

23. वर्तमान आवेदन-पत्र स्वरूप केमिकल्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा दायर किया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक के अलावा, भारत में संबद्ध सामानों के दो अन्य उत्पादक हैं अर्थात् अंबाचेम इंडस्ट्रीज और सुदामा केमटेक प्राइवेट लिमिटेड, जिन्होंने भी आवेदन-पत्र का समर्थन किया है। यह नोट किया जाता है कि ये दोनों घरेलू उत्पादक तकनीकी और निर्माण दोनों रूपों में थिरम का उत्पादन कर रहे हैं। इसके अलावा, संबद्ध सामानों के अन्य घरेलू उत्पादक हैं जो केवल निर्माण रूप में थिरम का उत्पादन करते हैं।
24. प्राधिकारी का मानना है कि जिन उत्पादकों के पास थिरम तकनीकी के उत्पादन के लिए विनिर्माण सुविधाएं नहीं हैं और जो केवल तकनीकी को निर्माण रूप में परिवर्तित करने में लगे हुए हैं, उन्हें नियम 2(ख) के अभिप्राय से घरेलू उद्योग नहीं माना जा सकता है, क्योंकि वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद में तकनीकी और निर्माण दोनों रूप शामिल हैं और इन उत्पादकों ने विचाराधीन उत्पाद का एक रूप खरीदा है और केवल इसे दूसरे रूप में परिवर्तित किया है। तकनीकी और निर्माण एक ही उत्पाद के दो रूप हैं जिनमें तकनीकी रूप के उत्पादन में प्रमुख निवेश, उत्पादन प्रौद्योगिकी, विनिर्माण गतिविधियां, संयंत्र और उपस्कर, रोजगार, कच्ची सामग्री, उत्पादन कौशल शामिल हैं। इसलिए, घरेलू उत्पादकों के लिए यह अनिवार्य है कि वे तकनीकी रूप के निर्माता हों, ताकि उन्हें पात्र घरेलू उद्योग माना जा सके। विचाराधीन उत्पाद के निर्माण रूप के उत्पादक या तो भारत में तकनीकी थिरम के उत्पादकों से तकनीकी खरीद रहे हैं या उन्होंने इसे संबद्ध देश से आयात किया है। चूंकि ऐसी संस्थाओं को शामिल करने से दोहरी गणना हो जाएगी, इसलिए उन्हें भारतीय उत्पादन के निर्धारण में शामिल नहीं किया गया है और परिणामस्वरूप बने हुए हैं।
25. अन्य हितबद्ध पक्षकारों के इस अनुरोध पर कि आवेदक ने विचाराधीन उत्पाद का आयात किया है, प्राधिकारी ने लेन-देनवार आयात आंकड़ों की जांच की है और पाया है कि आवेदक द्वारा उत्पाद का कोई आयात नहीं किया गया है। आवेदक ने स्पष्टीकरण दिया है कि उसने जांच की अवधि से पहले घरेलू बाजार से तकनीकी थिरम खरीदा था। आवेदक ने अपने द्वारा की गई खरीद के लिए पर्याप्त कारण बताए हैं। जांच की अवधि में कोई खरीद नहीं की गई है।

26. नीचे दी गई तालिका आवेदक और समर्थकों (केवल तकनीकी थिरम के) के उत्पादन को दर्शाती है।

क्र.सं.	विवरण	यूओएम	2020-21	2021-22	2022-23	जांच की अवधि
1	स्वरूप केमिकल्स प्राइवेट लिमिटेड	एमटी	***	***	***	***
	समर्थक					
2	अंबाचेम इंडस्ट्रीज	एमटी	***	***	***	***
3	सुदामा केमटेक प्राइवेट लिमिटेड	एमटी	***	***	***	***
4	कुल उत्पादन	एमटी	327	321	590	485

27. आवेदक का अकेले ही कुल भारतीय उत्पादन में 70% हिस्सा है। उपर्युक्त के मद्देनजर, नियम 2(ख) के प्रावधानों और मामले के तथ्यों पर विचार करते हुए, प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि आवेदक का संबद्ध सामानों के कुल घरेलू उत्पादन में प्रमुख अनुपात है। प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि आवेदक नियम 2(ख) के अर्थ में घरेलू उद्योग है और नियमावली के नियम 5(3) के अनुसार आधार के मानदंडों को पूरा करता है।

ड. गोपनीयता

ड.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

28. गोपनीयता के संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं:

- क. उत्तरदाता ने प्राधिकारी द्वारा स्वीकार किए गए गोपनीयता के दावे के अनुसार अगोपनीय रूपांतर दिया है।
- ख. किसी भी मामले में, आवेदक उद्योग द्वारा उल्लिखित की गई अधिकांश सूचना व्यवसाय के प्रति संवेदनशील है और इसलिए इसे हमेशा गोपनीय के रूप में दावा करने की अनुमति है।
- ग. आवेदक उद्योग ने अपनी लागत और मूल्य निर्धारण संबंधी जानकारी को गोपनीय होने का दावा किया है।

ड.2 आवेदक द्वारा किए गए अनुरोध

29. गोपनीयता के संबंध में आवेदक ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं:

- क. उत्तरदाता व्यापार नोटिस 10/2018 का पालन करने में विफल रहा है। लागत, उत्पाद, विचाराधीन उत्पाद के प्रतिस्थापन और प्रभाव की मात्रा से संबंधित सूचना को बिना किसी उचित आधार के गोपनीय होने का दावा किया गया है।
- ख. प्रयोक्ता प्रश्नावली के उत्तर के अनुबंध 1-5 और प्रदर्श 3 को पूरी तरह से गोपनीय होने का दावा किया गया है।
- ग. प्रयोक्ता उत्तर पूर्ण रूप से कमीपूर्ण हैं क्योंकि प्रयोक्ता ने उत्तर में वही प्रदर्श पांच बार दोहराया है। उत्तर से कुछ प्रदर्श भी गायब हैं।
- घ. प्रयोक्ता ने आरोप लगाया है कि एक और कारक है जो उद्योग को क्षति पहुंचा सकता है परंतु उसे गोपनीय होने का दावा किया गया है।

ड.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

30. प्राधिकारी ने नियम 6(7) और व्यापार सूचना 01/2020 (प्राधिकारी द्वारा अगली सूचना तक बढ़ाए गए अनुसार) के साथ पठित दिनांक 7 सितंबर 2018 की व्यापार सूचना 10/2018 के अनुसार विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रदान की गई सूचना का अगोपनीय रूपांतर सभी हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराया।

31. सूचना की गोपनीयता के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के नियम 7 में निम्नलिखित प्रावधान हैं:

“गोपनीय सूचना : (1) नियम 6 के उपनियमों (2), (3) और (7), नियम 12 के उपनियम (2), नियम 15 के उपनियम (4) और नियम 17 के उपनियम (4) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी जांच की प्रक्रिया में नियम के उपनियम 5(1) के अंतर्गत प्राप्त आवेदनों के प्रतियां या किसी पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रस्तुत किसी अन्य सूचना के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी उसकी गोपनीयता से संतुष्ट होने पर उस सूचना को गोपनीय मानेंगे और ऐसी सूचना देने वाले पक्षकार से स्पष्ट प्राधिकार के बिना किसी अन्य पक्षकार को ऐसी किसी सूचना का प्रकटन नहीं करेंगे।

(2) निर्दिष्ट प्राधिकारी गोपनीय अधिकारी पर सूचना प्रस्तुत करने वाले पक्षकारों से उसका अगोपनीय सारांश प्रस्तुत करने के लिए कह सकते हैं और यदि ऐसी सूचना प्रस्तुत करने वाले किसी पक्षकार की राय में उस सूचना का सारांश नहीं हो सकता है तो वह पक्षकार निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस बात के कारण संबंधी विवरण प्रस्तुत करेगा कि सारांश करना संभव क्यों नहीं है।

(3) उप नियम (2) में किसी बात के होते हुए भी यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात से संतुष्ट है कि गोपनीयता का अनुरोध अनावश्यक है या सूचना देने वाला या तो सूचना को सार्वजनिक नहीं करना चाहता है या उसकी सामान्य रूप में या सारांश रूप में प्रकटन नहीं करना चाहता है तो वह ऐसी सूचना पर ध्यान नहीं दे सकते हैं।”

32. आवेदक और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीयता के संबंध में प्रस्तुत किए गए अनुरोधों की, जहां तक संगत माना गया, प्राधिकारी द्वारा जांच की गई और तदनुसार उनका समाधान किया गया। संतुष्ट होने पर, प्राधिकारी ने जहां भी आवश्यक था, गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और यह सूचना गोपनीय मानी गई है तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट नहीं की गई है। जहां भी संभव हुआ, गोपनीय आधार पर सूचना देने वाले पक्षों को यह निर्देश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर दायर की गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतर उपलब्ध कराएं। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि सभी हितबद्ध पक्षकारों ने अपने व्यापार संबंधी संवेदनशील सूचना को गोपनीय होने का दावा किया है।

च. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण

च.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

33. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने सामान्य मूल्य, निर्यात मूल्य और पाटन मार्जिन के संबंध में कोई अनुरोध नहीं किया है।

च.2 आवेदक द्वारा किए गए अनुरोध

34. आवेदक ने सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- i. आवेदक द्वारा दावा किए गए मार्जिन के बावजूद, यूरोपीय उत्पादक ने वर्तमान जांच में भाग नहीं लिया है।
- ii. उत्तर का अभाव यह दर्शाता है कि यूरोपीय बाजार में वास्तविक सामान्य मूल्य आवेदक द्वारा दावा किए गए सामान्य मूल्य से कहीं अधिक है।
- iii. विभिन्न देशों में थिराम सूत्रीकरण पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। 9 अक्टूबर 2018 के विनियमन (ईयू) 2018/1500 को लागू करके यूरोपीय आयोग ने थिराम के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया। इसके अलावा, आयोग ने थिराम युक्त पौधों के संरक्षण उत्पादों के साथ इलाज किए गए बीजों के उपयोग को भी प्रतिबंधित किया। थिराम को केवल यूरोपीय संसद के विनियमन (ईयू) नंबर

528/2012 के तहत अनुमोदित किया जाता है और बायोकाइडल उत्पादों में उपयोग के लिए परिषद (17)। नतीजतन, यूरोपीय उत्पादकों को अब अधिशेष क्षमताओं का सामना करना पड़ रहा है और उत्पाद को अन्य देशों को बहुत कम कीमतों पर निर्यात कर रहे हैं।

च.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

च.3.1 यूरोपीय संघ के लिए सामान्य मूल्य

35. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के सभी तर्कों को नोट किया है तथा प्रस्तुत अनुरोधों के सभी संगत पहलुओं की निम्नलिखित रूप में जांच की है।
36. अधिनियम की धारा 9क(1)(ग) के तहत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का तात्पर्य है:

“व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की तुलनीय कीमत जब वह उप नियम (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातक देश या क्षेत्र में खपत के लिए नियत हो, अथवा जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की कोई बिक्री न हुई हो अथवा जब निर्यातक देश या क्षेत्र की बाजार विशेष की स्थिति अथवा उसके घरेलू बाजार में कम बिक्री मात्रा के कारण ऐसी बिक्री की उचित तुलना न हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा:-

(क) समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत जब उसका निर्यात उप-धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से किया गया हो; अथवा

(ख) उपधारा- (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत एवं लाभ हेतु उचित वृद्धि के साथ उद्गम वाले देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत;

बशर्ते यदि उक्त वस्तु का आयात उद्गम वाले देश से भिन्न किसी देश से किया गया है और जहां उक्त वस्तु को निर्यात के देश से होकर केवल यानांतरण किया गया है अथवा ऐसी वस्तु का उत्पादन निर्यात के देश में नहीं होता है, अथवा निर्यात के देश में कोई तुलनीय कीमत नहीं है, वहां सामान्य मूल्य का निर्धारण उद्गम वाले देश में उसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा।

37. प्राधिकारी ने संबद्ध देश में ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी, जिसमें उन्हें प्राधिकारी द्वारा निर्धारित प्रारूप और तरीके से जानकारी प्रदान करने का परामर्श दिया गया। प्राधिकारी नोट करते हैं कि यूरोपीय संघ के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने वर्तमान जांच में भाग नहीं लिया है। प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर कारखानागत स्तर पर सामान्य मूल्य निर्धारित किया है। इस प्रकार से परिकलित सामान्य मूल्य नीचे पाटन मार्जिन तालिका में दिया गया है।

च.3.2 यूरोपीय संघ के लिए निर्यात कीमत

38. संबद्ध देश के किसी उत्पादक से सहयोग के अभाव में, प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली, 1995 के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर शुद्ध निर्यात कीमत निर्धारित की है तथा इसका विवरण नीचे पाटन मार्जिन तालिका में दिया गया है।

च.3.3 पाटन मार्जिन

39. ऊपर बताए अनुसार निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर विचार करते हुए, पाटन मार्जिन की गणना की गई है तथा नीचे दर्शाया गया है।

क्र.सं.	विवरण	सामान्य मूल्य	निवल निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन		
		यूएसडॉ./एमटी	यूएसडॉ./एमटी	यूएसडॉ./एमटी	%	रेंज
1	कोई उत्पादक	***	***	***	***	40-50

छ. क्षति का आकलन

छ.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

40. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा क्षति और कारणात्मक संपर्क के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:
- क. 2020 और 2023 के बीच यूरोपीय संघ से तथाकथित रूप से पाटित आयातों की मात्रा में निरपेक्ष रूप से 8% की कमी आई है।
 - ख. इसी अवधि में आवेदक के उत्पादन (-32 सूचकांक) और घरेलू खपत (-8 सूचकांक) के सापेक्ष यूरोपीय संघ से आयात में भी कमी आई है।
 - ग. विचाराधीन अवधि के दौरान आयातों की बाजार हिस्सेदारी में 14 सूचकांक की कमी आई, जबकि आवेदक की बाजार हिस्सेदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई (+223 सूचकांक)।
 - घ. आवेदक 2020 और 2023 के बीच बिक्री मूल्य में 11 सूचकांक की वृद्धि करने में सक्षम था। इसलिए, यह तर्क देना मुश्किल है कि आयात कीमतों का घरेलू कीमतों पर अवसादग्रस्त प्रभाव पड़ा।
 - ङ. संबंधित अवधि के दौरान क्षमता स्थिर रही जबकि 2020 और 2023 के बीच क्षमता उपयोग और उत्पादन में 16 सूचकांक की वृद्धि हुई और बाजार हिस्सेदारी में 223% की वृद्धि हुई।
 - च. घरेलू बिक्री में 16 सूचकांक की वृद्धि हुई और घरेलू बिक्री कीमत में 11 सूचकांक की वृद्धि हुई; रोजगार स्थिर रहा, और क्षति अवधि के दौरान मजदूरी में वृद्धि हुई (+34 सूचकांक)।
 - छ. संबंधित उत्पाद की मांग उल्लेखनीय रूप से स्थिर है। यह 2021-22 की अवधि में 4 सूचकांक से बढ़ जाती है, अगले वर्ष 2 सूचकांक से घट जाती है और फिर आधार वर्ष (100 सूचकांक) के समान जांच की अवधि में समान स्तर पर पहुंच जाती है।
 - ज. पिछले 11 वर्षों में, इस उत्पाद और इसकी दक्षता के बारे में बढ़ती जागरूकता के कारण धीरे-धीरे आयात बढ़ रहा है।
 - झ. आयात सामान्य वृद्धि दर से बढ़ रहे हैं। आवेदक उद्योग ने संबद्ध देश से बढ़े हुए आयात के बारे में प्राधिकारी के साथ पूर्वाग्रह पैदा करने के लिए 2018-19 और 2019-20 के आयात आंकड़ों को छोड़ दिया है।
 - ञ. आवेदक ने पाटनरोधी याचिका में अपनी उत्पादन क्षमता, बाजार हिस्सेदारी और लागत संरचनाओं को गलत तरीके से प्रस्तुत किया है।

- ट. आवेदक ने थिरम टेक्निकल की लागत में निर्माण प्रक्रिया से जुड़ी लागतों को शामिल करके अपने लागत डेटा को बढ़ा दिया है, जिससे क्षति का गलत चित्रण हुआ है।
- ठ. घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत क्षति संबंधी आंकड़ों के समेकन में पारदर्शिता का अभाव है तथा इसमें बाजार विभाजन, क्षेत्रीय मांग भिन्नताओं और उत्पाद प्रकारों में अंतर जैसे प्रमुख मापदंडों को ध्यान में नहीं रखा गया है।
- ड. घरेलू उद्योग ने अपने क्षति विश्लेषण में प्रयुक्त कार्यप्रणाली, विशेष रूप से विभिन्न उत्पाद प्रकारों से आंकड़ों के समेकन तथा लाभ मार्जिन और क्षमता उपयोग दरों की गणना के संबंध में, के लिए पर्याप्त औचित्य प्रदान नहीं किया है।

छ.2 आवेदक द्वारा किए गए अनुरोध

41. घरेलू उद्योग द्वारा क्षति और कारणात्मक संपर्क के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- क. यूरोपीय संघ ने 9 अक्टूबर 2018 के विनियमन (ईयू) 2018/1500 को लागू करके थिरम के उपयोग पर रोक लगा दी। परिणामस्वरूप, यूरोपीय उत्पादकों को अब अधिशेष क्षमताओं का सामना करना पड़ रहा है और वे अन्य देशों को बेहद कम कीमतों पर उत्पाद निर्यात कर रहे हैं।
- ख. यूरोपीय संघ में लगाए गए प्रतिबंधों के कारण, कम कीमत वाले आयात घरेलू बाजार में आने शुरू हो गये, जिससे आवेदक के निष्पादन में काफी गिरावट आई।
- ग. चूंकि उत्पादित किया जा रहा प्राथमिक उत्पाद थिरम तकनीकी है, इसलिए संपूर्ण डेटा थिरम तकनीकी के समकक्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया है। थिरम निर्माण का कोई आयात नहीं है।
- घ. आवेदक ने निर्माण और तकनीकी दोनों के लिए अलग-अलग लागत के साथ-साथ क्षति की जानकारी भी प्रदान की है।
- ड. उत्पाद की मांग 2021-22 में बढ़ी, वर्ष 2022-23 में और बढ़ी, लेकिन जांच की अवधि में मामूली गिरावट आई।
- च. संबद्ध देश से आयात 2022-23 तक कम हुआ, लेकिन जांच अवधि में फिर से बढ़ गया है। मांग में गिरावट के बावजूद आयात में वृद्धि हुई।
- छ. जबकि आवेदक अकेले देश में पूरी मांग को पूरा कर सकता था, जांच अवधि में इसकी हिस्सेदारी 27% से कम थी।
- ज. जांच अवधि के बाद यूरोपीय संघ से आयात की मात्रा में लगभग 35% की तेजी से वृद्धि हुई है।
- झ. जांच के बाद की अवधि में यूरोपीय संघ से आयात में वृद्धि हुई है, साथ ही आयात कीमत में भारी गिरावट आई है।
- ञ. उत्पादन के संबंध में आयात 2021-22 में बढ़ा, 2022-23 में घटा, लेकिन जांच की अवधि में फिर से बढ़ गया है।
- ट. खपत के संबंध में आयात 2021-22 में घटा और जांच की अवधि में लगभग समान स्तर पर रहा है।
- ठ. संबद्ध सामानों की पहुंच कीमत पूरी क्षति अवधि में लगातार आवेदक की बिक्री कीमत से कम रही है। इसके परिणामस्वरूप आवेदक की हानियों पर उत्पाद बेचने के बावजूद सकारात्मक कीमत कटौती हुई है।
- ड. आयातों की पहुंच कीमत लगातार आवेदक की बिक्री लागत से कम रही है।
- ढ. घरेलू उद्योग की कीमतें जांच की अवधि में न्यूनीकृत रही हैं।

- ग. क्षमता उपयोग 2021-22 में घटा, 2022-23 में बढ़ा, लेकिन जांच की अवधि में इसमें गिरावट आई है। यद्यपि आवेदक को अपनी घरेलू बिक्री के संबंध में घाटा हुआ है, फिर भी आयात इष्टतम क्षमता उपयोग में बाधा डाल रहा है।
- त. आवेदक की घरेलू बिक्री क्षति अवधि में बढ़ी है। हालाँकि, आवेदक केवल इसलिए बेच पाया है क्योंकि उसने घाटे में बेचा है।
- थ. आवेदक के पास क्षति अवधि में मालसूची बढ़ी है।
- द. आवेदक भारतीय मांग का केवल 27% ही पूरा कर पाया है। इसके अलावा, भारतीय उद्योग का समग्र रूप से बाजार हिस्सा भी केवल 40% के आसपास है।
- ध. आवेदक 2022-2023 को छोड़कर पूरी क्षति अवधि में घाटे में रहा है।
- न. व्याज और कर पूर्व लाभ 2021-22 में सुधरा, 2022-23 में नकारात्मक हो गया और फिर जांच की अवधि में तेजी से गिरावट आई।
- प. मात्रा और कीमत मापदंड उस सीमा तक वांछित स्तरों से कम रहे हैं कि क्षति की अवधि में संचित आवेदक की हानियां व्यापार में नियोजित अचल परिसंपत्तियों की 1/3 हैं।
- फ. चूंकि आवेदक को घरेलू बाजार में थिरम टेक्निकल को बेचना मुश्किल हो रहा है, इसलिए इसका उत्पादन प्रभावित हो रहा है, जिससे लागत बढ़ रही है। इससे थिरम निर्माण की लागत भी बढ़ रही है।
- ब. आवेदक का नकद घाटा काफी बढ़ गया है और व्यापार में नकद प्रवाह की भारी कमी है।

छ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

42. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों को नोट किया है तथा हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों पर विधिवत विचार करने के पश्चात नियमावली के अनुसार विभिन्न मापदंडों की जांच की है। प्राधिकारी द्वारा नीचे किया गया यथा-तथ्यतः क्षति विश्लेषण हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए विभिन्न अनुरोधों का समाधान करता है।
43. अनुबंध-II के साथ पठित नियमावली के नियम में यह प्रावधान है कि क्षति के निर्धारण में पाटित 11 आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर इस प्रकार के आयातों का परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत तथ्यों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को क्षति दर्शाने वाले कारकों की जांच शामिल होगी। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए, इस बात की जांच करना आवश्यक माना गया है कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमत में बहुत अधिक कटौती हुई है अथवा यह कि क्या इस प्रकार के आयातों के प्रभाव से अन्यथा कीमतों का बहुत अधिक मात्रा में ह्रास हुआ है अथवा कीमत में वृद्धि रूक जाती जो अन्यथा बहुत अधिक मात्रा में हुई होती। भारत में घरेलू उद्योगों पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए, इन सूचकांकों जिनका उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता हो जैसे उत्पादन, क्षमता का उपयोग, बिक्री की मात्रा, मालसूची, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन आदि पर विचार नियमावली के अनुबंध-II के अनुसार किया गया है।
44. आवेदक ने उत्पाद के तकनीकी और निर्माण दोनों रूपों पर अलग-अलग जानकारी प्रदान की है। निर्माण के लिए मात्रा तकनीकी मात्रा के बराबर के स्तर पर प्रदान की गई है। प्राधिकारी ने तकनीकी रूप के संबंध में

उत्पादन और क्षमता उपयोग पर विचार किया है क्योंकि प्राथमिक उत्पादन गतिविधि तकनीकी के उत्पादन में है, और तकनीकी को निर्माण में संसाधित करना एक मात्र वृद्धिशील उत्पादन प्रक्रिया है।

45. आवेदक ने घरेलू बाजार में तकनीकी और निर्माण दोनों रूपों को बेचा है, और घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से की गणना उत्पाद के तकनीकी और निर्माण दोनों रूपों पर विचार करते हुए की गई है। थिरम निर्माण की मात्रा की जानकारी निर्माण के उत्पादन में तकनीकी की वास्तविक प्रति इकाई खपत मानदंडों का उपयोग करके थिरम तकनीकी के बराबर लाई गई है। दोनों उत्पादों पर विचार करके लाभ, नकद लाभ, ब्याज और कर पूर्व लाभ, निवेश पर आय और मालसूची पर विचार किया गया है। निम्नलिखित तालिका घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित थिरम निर्माण की प्रति इकाई में थिरम तकनीकी के हिस्से को दर्शाती है।

क्र. सं.	संकेन्द्रण	2020-21	2021-22	2022-23	जांच की अवधि
1	निर्माण में कुल थिरम तकनीकी खपत	***	***	***	***
2	कुल थिरम निर्माण उत्पादन (वास्तविक)	***	***	***	***
3	निर्माण की प्रति इकाई थिरम तकनीकी का अनुपात	***	***	***	***

46. इस अनुरोध के संबंध में कि घरेलू उद्योग ने अधिक घाटा दिखाने के लिए निर्माण को शामिल किया है, यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग को उत्पाद के तकनीकी और निर्माण दोनों रूपों में घाटा हुआ है, और इसलिए, यह तर्क गलत है कि घाटे को बढ़ाने के लिए निर्माण को शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त, इस अनुरोध के संबंध में कि निर्माण प्रक्रिया से जुड़ी लागतों को शामिल करके तकनीकी लागत को बढ़ा दिया गया है, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों का सत्यापन किया है। प्राधिकारी ने खुद को संतुष्ट किया है कि ऐसे रिकॉर्ड सामान्य रूप से स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों के अनुसार हैं और विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन और बिक्री से जुड़ी लागतों को उचित रूप से दर्शाते हैं।
47. क्षति और कारणात्मक संपर्क के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों, जिन्हें प्राधिकारी द्वारा संगत माना गया है, की जांच की जाती है और उन्हें निम्नानुसार हल किया जाता है।

क. मांग/स्पष्ट खपत का आकलन

48. प्राधिकारी ने आवेदक की घरेलू बिक्री, समर्थकों की वास्तविक बिक्री और सभी स्रोतों से आयात के योग के रूप में भारत में उत्पाद की मांग या स्पष्ट खपत का निर्धारण किया है। आवेदक और समर्थकों की घरेलू बिक्री को तकनीकी रूप के बराबर माना गया है। निर्माण के अन्य आपूर्तिकर्ता आयातित या घरेलू रूप से बेचे जाने वाले तकनीकी से निर्माण का उत्पादन कर रहे हैं। यदि इन संस्थाओं के निर्माण की बिक्री को शामिल किया जाता है, तो इससे दोहरा लेखा-जोखा हो जाएगा। इसलिए, इन उत्पादकों की निर्माण बिक्री पर विचार नहीं किया गया है।

क्र.सं.	विवरण	यूओएम	2020-21	2021-22	2022-23	जांच की अवधि
1	घरेलू उद्योग की बिक्री	एमटी	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	81	117	114
2	समर्थक की बिक्री	एमटी	***	***	***	***

	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	251	259	191
3	संबद्ध देश का आयात	एमटी	935	827	864	810
4	अन्य देशों का आयात	एमटी	-	-	-	-
5	कुल मांग	एमटी	1318	1253	1408	1,298
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	95	107	98

49. यह देखा जा सकता है कि उत्पाद की मांग 2021-22 में घटी, 2022-23 में और बढ़ी, लेकिन जांच अवधि में फिर से गिरावट आई।

ख. पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव

50. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में, प्राधिकारी को यह विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में, चाहे निरपेक्ष रूप से या भारत में उत्पादन या खपत के सापेक्ष, कोई उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। नीचे दी गई तालिका, संबद्ध देश से आयातों की मात्रा दर्शाती है।

क्र.सं.	विवरण	यूओएम	2020-21	2021-22	2022-23	जांच की अवधि
1	संबद्ध आयात	एमटी	935	827	864	810
2	अन्य आयात	एमटी	-	-	-	-
3	कुल आयात	एमटी	935	827	864	810
4	निम्नलिखित के संबंध में संबद्ध देश के आयात					
क	भारतीय उत्पादन	%	144%	125%	82%	93%
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	86	57	64
ख	भारतीय मांग	%	71%	65%	60%	62%
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	92	85	88
ग	कुल आयात	%	100%	100%	100%	100%

51. संबद्ध देश से आयात 2021-22 में कम हुए, 2022-23 में मामूली रूप से बढ़े लेकिन जांच की अवधि में फिर से कम हो गये। यह देखा जाता है कि उत्पादन और मांग के संबंध में आयात 2021-22 में कम हुए, 2022-23 में और कम हुए लेकिन जांच की अवधि में फिर से बढ़ गये। आयात घरेलू उत्पादन और मांग का एक महत्वपूर्ण अनुपात बनाए रखता है।

ग. पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

52. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में, यह विश्लेषण किया जाना आवश्यक है कि क्या भारत में समान उत्पादों की कीमत की तुलना में पाटित आयातों से काफी कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव कीमतों को कम करने या कीमत वृद्धि को रोकने के लिए है, जो अन्यथा सामान्य प्रक्रिया में हुई होती। इसके अलावा, प्राधिकारी के लिए यह अपेक्षित है कि वे कीमत न्यूनीकरण/हासमान प्रभाव, यदि कोई है, की जांच करके घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करें।

i. कीमत कटौती

53. प्राधिकारी ने थिरम टेक्निकल और थिरम फॉर्म्यूलेशन को दो पीसीएन के रूप में अधिसूचित किया था। चूंकि पीसीएन को अपनाया गया है, इसलिए पीसीएन के अनुसार कीमत कटौती निर्धारित की गई है। थिरम फॉर्म्यूलेशन का कोई आयात नहीं है और इसलिए, केवल थिरम टेक्निकल के लिए कीमत कटौती निर्धारित की गई है।

54. नीचे दी गई तालिका जांच अवधि के दौरान कीमत कटौती को दर्शाती है।

क्र.सं.	विवरण	यूओएम	जांच की अवधि
1	बिक्री कीमत	रु./एमटी	***
2	पहुंच कीमत	रु./एमटी	***
3	कीमत कटौती	रु./एमटी	***
4	कीमत कटौती	%	***
5	कीमत कटौती	रेंज	15-25%

55. यह देखा जाता है कि आयातों की पहुंच कीमत आवेदक की बिक्री कीमत से काफी कम है, जिसके परिणामस्वरूप आवेदक द्वारा घाटे में उत्पाद बेचने के बावजूद सकारात्मक कीमत कटौती हुई है।

56. प्राधिकारी ने आयातक के आंकड़ों की भी जांच की है, जो *** से आयात की एक महत्वपूर्ण मात्रा को दर्शाता है, जो एक ऐसा निर्यातक है जिसने जांच में सहयोग नहीं किया है। इन आयातों का सीआईएफ मूल्य *** रुपये प्रति एमटी (पहुंच कीमत *** रुपये) घरेलू खरीद मूल्य *** रुपये प्रति एमटी से काफी कम है, जो कीमत कटौती की पुष्टि करता है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि आयातक स्वयं विदेशी और घरेलू दोनों स्रोतों से खरीद कर रहा है, लेकिन आयात की मात्रा घरेलू उद्योग से खरीद की तुलना में बहुत अधिक है [*** एम टी बनाम *** एमटी टन], जो सस्ते पाटित आयातों से तरजीही स्रोत की पुष्टि करता है।

ii. कीमत ह्रास और न्यूनीकरण

57. नीचे दी गई तालिका थिराम तकनीकी की लागत और बिक्री मूल्य में परिवर्तन के बारे में जानकारी दिखाती है।

क्र.सं.	विवरण	यूओएम	2020-21	2021-22	2022-23	जांच की अवधि
1	बिक्री लागत	रु./एमटी	***	***	***	***
	परिवर्तन	रु./एमटी		(***)	***	(***)
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	85	120	112
2	बिक्री कीमत	रु./एमटी	***	***	***	***
	परिवर्तन	रु./एमटी		***	(***)	(***)
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	150	137	134

- i. आंकड़ों से पता चलता है कि 2021-22 में, थिराम तकनीकी go ***/mt की बिक्री मूल्य बिक्री की लागत को ₹ ***/mt से पार कर गया, जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के लिए एक लाभदायक वर्ष था। हालांकि, बाद के वर्षों में, यह प्रवृत्ति उलट गई।
- ii. 2022-23 में, लागत तेजी से ₹ ***/mt हो गई, जबकि बिक्री मूल्य ₹ ***/mt तक गिर गया।
- iii. जांच की अवधि (POI) में, लागत in ***/mt पर अधिक रही, जबकि बिक्री मूल्य में और गिरकर ** ***/mt।
- iv. यह प्रवृत्ति इंगित करती है कि जबकि घरेलू उद्योग अपनी लागतों को कवर करने और 2021-22 में मुनाफा कमाने में सक्षम था, इसने 2022-23 और पीओआई में महत्वपूर्ण मूल्य दमन और अवसाद का अनुभव किया, जब बढ़ती लागतों में कीमतों में आनुपातिक वृद्धि के साथ मिलान नहीं किया जा सकता था।

58. नीचे दी गई तालिका थिराम फॉर्मूलेशन की लागत और बिक्री मूल्य में परिवर्तन के बारे में जानकारी दिखाती है।

क्र.सं.	विवरण	यूओएम	2020-21	2021-22	2022-23	जांच की अवधि
1	बिक्री लागत	रु./एमटी	***	***	***	***
	परिवर्तन	रु./एमटी		***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	114	128	139
2	बिक्री कीमत	रु./एमटी	***	***	***	***
	परिवर्तन	रु./एमटी		***	(***)	(***)
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	129	122	118

थिराम सूत्रीकरण में एक समान प्रवृत्ति देखी जाती है:

- i. घरेलू उद्योग ने 2020-21 में कुछ मुनाफा कमाया।
- ii. इसके अलावा, 2021-22 में, बिक्री मूल्य “***/mt बिक्री की लागत से अच्छी तरह से ऊपर था, ***/mt, लाभप्रदता की अवधि का संकेत देता है।
- iii. हालांकि, 2022-23 में, लागत ₹ ***/mt तक बढ़ गई, जबकि कीमत ₹ ***/mt तक गिर गई लागत।
- iv. POI में, जबकि लागत में और बढ़कर****/mt तक बढ़ गया, बिक्री मूल्य में गिरावट आई, ₹ ***/mt, लागत से नीचे गिर गई।
- v. विश्लेषण से पता चलता है कि चोट की अवधि के दौरान मूल्य दमन और अवसाद स्थिर नहीं थे। घरेलू उद्योग ने 2020-21 और 2021-22 में मुनाफा कमाया, लेकिन इसके बाद मूल्य स्तर बनाए रखने में असमर्थता, विशेष रूप से पीओआई में, पीओआई में मूल्य दमन और अवसाद का संकेत देने वाली चोट की अवधि के बाद की कीमतों में लागत और वास्तविक गिरावट के साथ कीमतों में कीमतों को बढ़ाने में असमर्थता को प्रदर्शित करता है।

घ. आर्थिक मापदंड**i. क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और घरेलू बिक्री**

59. नीचे दी गई तालिका क्षति अवधि के दौरान क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और घरेलू बिक्री के बारे में सूचना दर्शाती है।

क्र.सं.	विवरण	यूओएम	2020-21	2021-22	2022-23	जांच की अवधि
1	तकनीक की संस्थापित क्षमता	एमटी	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	100	100
2	तकनीक का उत्पादन	एमटी	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	59	151	135
3	तकनीक संयंत्र का क्षमता उपयोग	%	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	59	151	135
4	निर्माण में अंतरित तकनीक	एमटी	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	29	119	118
5	निर्माण का उत्पादन (तकनीक के समतुल्य)	एमटी	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	70	106	95
6	तकनीक की घरेलू बिक्री	एमटी	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	213	304	323
7	निर्माण की घरेलू बिक्री (तकनीक के समतुल्य)	एमटी	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	65	95	89
8	कुल बिक्री	एमटी	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	81	117	114

60. यह देखा जाता है कि आवेदक के पास अकेले ही देश में संपूर्ण मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त क्षमता है। क्षति अवधि के दौरान क्षमता स्थिर रही है। यह भी देखा जाता है कि आवेदक का उत्पादन 2021-22 में घटा, 2022-23 में बढ़ा लेकिन जांच अवधि में इसमें गिरावट आई है।

61. क्षमता उपयोग 2021-22 में घटा, 2022-23 में बढ़ा लेकिन जांच अवधि में इसमें फिर से गिरावट आई है। आवेदक का क्षमता उपयोग बेहद कम है। घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री 2021-22 में घटी, 2022-23 में बढ़ी और जांच अवधि में इसमें गिरावट आई।

ii. बाजार हिस्सा

62. विभिन्न कंपनियों की बाजार हिस्सा संबंधी सूचना नीचे दी गई है: -

क्र.सं.	निम्नलिखित का बाजार हिस्सा	यूओएम	2020-21	2021-22	2022-23	जांच की अवधि
1	घरेलू उद्योग	%	***	***	***	***

	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	85	109	115
2	समर्थक	%	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	264	243	194
3	भारतीय उद्योग	%	29%	34%	39%	38%
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	117	133	130
3	संबद्ध देश का आयात	%	71%	66	61	62%
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	93	86	88

63. घरेलू उद्योग की बाजार हिस्सेदारी 2021-22 में घटी, 2022-23 में बढ़ी लेकिन जांच अवधि में फिर से घट गई। भारतीय उद्योग की बाजार हिस्सेदारी 2022-23 तक बढ़ी लेकिन जांच अवधि में फिर से घट गई। आयात की बाजार हिस्सेदारी 2022-23 तक घटी लेकिन जांच अवधि में फिर से बढ़ गई। भारतीय उद्योग के पास देश में पूरी मांग को पूरा करने की पर्याप्त क्षमता है लेकिन क्षति अवधि के दौरान भारतीय उद्योग की हिस्सेदारी अधिकतम 40% तक पहुंच गई है।

iii. मालसूची

64. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के पास मालसूची की स्थिति नीचे दी गई तालिका में दी गई है:

क्र.सं.	विवरण	यूओएम	2020-21	2021-22	2022-23	जांच की अवधि
1	आरंभिक मालसूची	एमटी	***	***	***	***
2	अंतिम मालसूची	एमटी	***	***	***	***
3	औसत मालसूची	एमटी	***	***	***	***
4	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	97	97	125

65. यह देखा जाता है कि घरेलू मालसूची में 2022-23 तक गिरावट आई है, लेकिन जांच अवधि में इसमें वृद्धि हुई है।

iv. लाभप्रदता, नकद लाभ और नियोजित पूंजी पर आय

66. घरेलू उद्योग के निष्पादन की जांच लाभप्रदता, लाभ, नकद लाभ, पीबीआईटी और निवेश पर आय के संबंध में की गई है।

क्र.सं.	विवरण	यूओएम	2020-21	2021-22	2022-23	जांच की अवधि
1	लाभ/(हानि)	रु./एमटी	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	572	-115	-352
2	लाभ/(हानि)	लाख रु.	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	461	-135	-400
3	पीबीआईटी	लाख रु.	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	224	23	-53

4	नकद लाभ	लाख रु.	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	389	-27	-222
5	आरओसीई	%	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	176	16	-37

67. यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग 2020-21 में लाभ में था। 2021-22 में आयात की मात्रा में कमी आने पर निष्पादन में सुधार हुआ। 2022-23 में आयात बढ़ने पर लाभप्रदता में कमी आई और घरेलू उद्योग को घाटा हुआ। जांच अवधि में स्थिति और भी खराब हो गई है क्योंकि घाटे में तेजी से वृद्धि हुई है।

68. यह भी देखा जाता है कि यद्यपि घरेलू उद्योग ने 2021-22 तक नकद लाभ दर्ज किया, तथापि 2022-23 में उसे नकद घाटा हुआ है जो जांच अवधि में बढ़ गया है। घरेलू उद्योग को 2022-23 तक नियोजित पूंजी पर सकारात्मक आय हुई थी परंतु जांच की अवधि में यह नकारात्मक हो गई।

69. प्राधिकारी का मानना है कि यह तथ्य कि घरेलू उद्योग को नकद घाटा हुआ है और नियोजित पूंजी पर नकारात्मक आय यह दर्शाता है कि नुकसान किसी निष्क्रिय क्षमता के कारण नहीं हुआ है।

v. रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता

70. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता नीचे दी गई तालिका में दी गई है:

क्र.सं.	विवरण	यूओएम	2020-21	2021-22	2022-23	जांच की अवधि
1	कर्मचारियों की संख्या	संख्या	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	104	98	100
2	वेतन एवं मजदूरी	लाख रु.	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	120	132
3	प्रति दिन उत्पादकता	एमटी/दिन	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	65	128	115
4	प्रति कर्मचारी उत्पादकता	एमटी/सं.	***	***	***	***
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	62	130	115

71. यह देखा जाता है कि क्षति अवधि में कर्मचारियों की संख्या लगभग समान स्तर पर रही है। क्षति अवधि में वेतन और मजदूरी में वृद्धि हुई है। उत्पादकता 2021-22 में घटी लेकिन 2022-23 में इसमें सुधार हुआ और जांच अवधि में इसमें और गिरावट आई।

vi. वृद्धि

72. क्षमता, उत्पादन, घरेलू बिक्री मात्रा, पीबीटी, पीबीआईटी, नकद लाभ और नियोजित पूंजी पर आय के संदर्भ में घरेलू उद्योग की वृद्धि नीचे दी गई तालिका के अनुसार है:

क्र.सं.	विवरण	यूनिट	2020-21	2021-22	जांच की अवधि
1	उत्पादन	वर्ष/वर्ष	-41%	155%	-10%

2	बिक्री	वर्ष/वर्ष	-19%	45%	-2%
3	बाजार हिस्सा	वर्ष/वर्ष	-10%	27%	-1%
4	लाभ/हानि	वर्ष/वर्ष	361%	-120%	-205%
5	नकद लाभ	वर्ष/वर्ष	289%	-107%	-735%
6	आरओसीई	वर्ष/वर्ष	76%	-91%	-335%
7	मालसूची	वर्ष/वर्ष	-3%	1%	29%

73. यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग ने जांच की अवधि में सभी मापदंडों में नकारात्मक वृद्धि दर्ज की है।

vii. पाटन की मात्रा

74. पाटन की मात्रा इस बात का संकेतक है कि आयात किस सीमा तक भारत में पाटित किया जा रहा है। जांच से पता चला है कि जांच अवधि में पाटन मार्जिन सकारात्मक और महत्वपूर्ण है।

viii. पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता

75. आवेदक को कीमत संकेतकों में पर्याप्त नकारात्मक वृद्धि हुई है। मापदंड अपेक्षित स्तरों से काफी नीचे रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप घाटा हुआ है। अपनी वर्तमान उत्पादन क्षमता के कम उपयोग और चल रहे वित्तीय घाटे के कारण, आवेदक की पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

ix. घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

76. जैसा कि ऊपर बताया गया है, आवेदक लाभदायक कीमतों पर बेचने में असमर्थ रहा है। पाटित आयात आवेदक की कीमत कटौती कर रहे हैं, जिससे उन्हें अपनी उत्पादन लागत से कम पर बेचने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। परिणामस्वरूप, इन आयातों ने आवेदक को अपने व्यावसायिक संचालन को बनाए रखने के लिए आवश्यक कीमतें निर्धारित करने से रोक दिया है।

ज. गैर-आरोपण विश्लेषण

77. नियमों के अनुसार, प्राधिकारी को, अन्य बातों के साथ-साथ, पाटित आयातों के अलावा किसी भी ज्ञात कारक की जांच करनी आवश्यक है जो घरेलू उद्योग को नुकसान पहुंचा रहे हैं या नुकसान पहुंचाने की संभावना रखते हैं, ताकि इन अन्य कारकों से होने वाली क्षति को पाटित आयातों के लिए जिम्मेदार न ठहराया जा सके। इस संबंध में संगत कारकों में, अन्य बातों के साथ-साथ, पाटित कीमतों पर न बेचे जाने वाले आयातों की मात्रा और कीमतें, मांग में कमी या खपत के पैटर्न में परिवर्तन, विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं और परिपाटियां और प्रतितिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी में विकास और घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन और उत्पादकता शामिल हैं। नीचे इस बात की जांच की गई है कि क्या नियमों के तहत सूचीबद्ध कारकों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति में योगदान दिया हो सकता है।

क. तीसरे देशों से आयात की मात्रा और कीमत

78. यह देखा जाता है कि संबद्ध सामानों का संपूर्ण आयात संबद्ध देश से भारत में आ रहा है। जांच अवधि में किसी अन्य देश से कोई आयात नहीं हुआ है।

ख. मांग में संकुचन

79. हालांकि क्षति अवधि के दौरान उत्पाद की मांग में थोड़ा उतार-चढ़ाव आया है, लेकिन यह मोटे तौर पर एक ही स्तर पर बनी हुई है। इसलिए, मांग में गिरावट क्षति का कारण नहीं हो सकती।

ग. खपत के पैटर्न में परिवर्तन

80. विचाराधीन उत्पाद के खपत के पैटर्न में कोई ज्ञात वास्तविक परिवर्तन नहीं हुआ है।

घ. व्यापार प्रतिबंधात्मक परिपाटियां

81. किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने किसी ज्ञात व्यापार प्रतिबंधात्मक परिपाटी से संबंधित कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है, जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो।

ड. प्रौद्योगिकी का विकास

82. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध सामानों के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इसलिए, प्रौद्योगिकी में विकास से घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।

च. निर्यात निष्पादन

83. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने क्षति अवधि के दौरान संबद्ध सामानों का निर्यात नहीं किया है। अतः, निर्यात निष्पादन घरेलू उद्योग के लिए क्षति का कारण नहीं है।

छ. अन्य उत्पादों का निष्पादन

84. प्राधिकारी ने केवल संबद्ध सामानों के निष्पादन से संबंधित आंकड़ों पर विचार किया है। अतः, घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और बेचे गए अन्य उत्पादों का निष्पादन घरेलू उद्योग के लिए क्षति का संभावित कारण नहीं है।

झ. क्षति मार्जिन की मात्रा

85. प्राधिकारी ने अनुबंध III के साथ पठित नियमावली में निर्धारित सिद्धांतों के आधार पर घरेलू उद्योग के लिए क्षति-रहित कीमत निर्धारित की है। घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराई गई उत्पादन लागत से संबंधित सूचना/आंकड़ों को अपनाकर क्षति-रहित कीमत निर्धारित की गई है। क्षति रहित कीमत की तुलना क्षति मार्जिन का परिकलन करने के लिए संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद की पहुंच कीमत से की गई है। क्षति-रहित कीमत निर्धारित करने के लिए कच्ची सामग्री और यूटिलिटियों के सर्वोत्तम उपयोग तथा उत्पादन क्षमता के सर्वोत्तम उपयोग पर विचार किया गया है। यह सुनिश्चित किया गया है कि उत्पादन लागत पर कोई असाधारण या गैर-आवर्ती व्यय नहीं लगाया गया है। विचाराधीन उत्पाद के लिए औसत नियोजित पूंजी (अर्थात् औसत शुद्ध अचल संपत्तियां और औसत कार्यशील पूंजी) पर उचित आय (कर-पूर्व @ 22%) को क्षति रहित कीमत निकालने के लिए कर-पूर्व लाभ के रूप में अनुमति दी गई थी। इस प्रकार निर्धारित एनआईपी को क्षति मार्जिन की गणना के लिए माना गया है।
86. उपर्युक्त के अनुसार निर्धारित पहुँच कीमत और एनआईपी के आधार पर, उत्पादक/निर्यातक प्राधिकारी द्वारा निर्धारित क्षति मार्जिन नीचे दी गई तालिका में दिया गया है:

क्र.सं.	विवरण	क्षति रहित कीमत	पहुँच कीमत	पाटन मार्जिन		
		यूएसडा./एमटी	यूएसडा./एमटी	यूएसडा./एमटी	%	रेंज
1	कोई उत्पादक	***	***	***	***	25-35

ज. भारतीय उद्योग के हित और अन्य मुद्दे**ज.1. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध**

87. सार्वजनिक हित के संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- क. भारत में वर्तमान मांग की तुलना में इस उत्पाद की बाजार क्षमता बहुत अधिक है। इसलिए, शुल्क भारतीय किसानों के हित में नहीं हैं।
- ख. किसानों पर प्रभाव को समझने के लिए, प्रति एकड़ बीज की वास्तविक आवश्यकताओं को समझना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, प्रति एकड़ लगभग 3500 किलोग्राम आलू के बीज की आवश्यकता

- होगी। इसका अर्थ है कि थिरम निर्माण की लागत लगभग 1750 रु. प्रति एकड़ (3500*.50) होगी। थिरम निर्माण पर 20% पाटनरोधी शुल्क को ध्यान में रखते हुए किसानों के लिए अतिरिक्त लागत 350 रु. प्रति एकड़ होगी। उपलब्ध सूचना के अनुसार, उत्तर प्रदेश में आलू के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य 650 रु. प्रति 100 किलोग्राम आलू है।
- ग. संबद्ध सामानों के लिए 34000 की लेबल मांग के अनुसार, आवेदक उद्योग के पास क्षमता बहुत कम है।
- घ. ये शुल्क सार्वजनिक हित में नहीं होंगे क्योंकि संबद्ध सामानों का उपयोग किसानों द्वारा अनिवार्य वस्तु के रूप में किया जाता है और इसलिए शुल्कों का कोई भी अतिरिक्त बोझ बड़ी आबादी पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव डालेगा।
- ड. शुल्क लगाते समय, राष्ट्र के समग्र विकास के लिए डाउनस्ट्रीम उद्योग और अंतिम प्रयोक्ताओं के हितों पर विचार किए जाने की आवश्यकता है।
- च. बाजार में अन्य अर्थक्षम प्रतिस्थापन उपलब्ध हैं। यदि निर्माण की कीमत बढ़ जाती है, तो किसान अन्य विकल्प खरीद लेंगे।
- छ. मिट्टी से बीजों की सुरक्षा में थिरम की महत्वपूर्ण भूमिका है। यदि पाटनरोधी शुल्क लगाया जाता है, तो किसान थिरम के उपयोग को अनदेखा कर सकते हैं जिससे फसल की पैदावार को भारी नुकसान होगा।

ब.2. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

88. सार्वजनिक हित के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- क. फसल सुरक्षा के लिए, थिरम को आमतौर पर विभिन्न फफूंद जनित रोगों की रोकथाम के लिए फफूंदनाशक के रूप में प्रयोग किया जाता है। किसान आमतौर पर प्रति हेक्टेयर 1-2 लीटर थिरम डालते हैं। 50 रुपये प्रति किलोग्राम के बीज पैकेट पर 30% पाटनरोधी शुल्क का प्रभाव केवल 15 पैसे होगा। मौखिक सुनवाई के दौरान प्रयोक्ता उद्योग और एसोसिएशन द्वारा भी इस तथ्य को स्वीकार किया गया है।
- ख. आवेदक के पास जांच की अवधि के दौरान न केवल संपूर्ण भारतीय मांग को पूरा करने की पर्याप्त क्षमता है, बल्कि वह वैश्विक आपूर्तिकर्ता भी बन सकता है।
- ग. घरेलू उद्योग के अनुमान के अनुसार, 1 किलोग्राम बीज आलू से लगभग 35-40 किलोग्राम आलू उगाए जा सकते हैं। यह भी माना जा सकता है कि अकेले फफूंदनाशक के रूप में थिरम निर्माण का आलू के बीजों में बहुत कम प्रयोग होता है।
- घ. आवेदक का व्यापार उपभोक्ताओं के समान राष्ट्रीय क्षेत्र में स्थित है, इसलिए वह उपभोक्ताओं के हितों को ध्यान में रखेगा।
- ड. जनहित केवल उपभोक्ता उद्योग के हित तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह एक बहुत व्यापक शब्द है, जो आवेदक और अंततः आम जनता के हितों को अपने क्षेत्र में शामिल करता है।
- च. विचाराधीन उत्पाद के आयात पर पाटनरोधी उपायों को लागू करना घरेलू उत्पादकों और उपभोक्ताओं के हित में होगा।
- छ. पाटनरोधी शुल्क उद्योग के लिए सुरक्षा नहीं है, बल्कि देश में निष्पक्ष बाजार प्रतिस्पर्धा लाने के लिए एक उपचारात्मक हथियार है।
- ज. प्रयोक्ताओं ने यह प्रदर्शित करने के लिए कोई साक्ष्य नहीं दर्शाया है कि शुल्क लगाने से लागत में वृद्धि होगी।

झ. पाटनरोधी कानून के उद्देश्य को माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी [केस संख्या 2006 (202) ई.एल.टी. 23 (एस.सी.)] के मामले में अच्छी तरह से माना और उल्लेख किया था।

ब.3. प्राधिकारी द्वारा जांच

89. प्राधिकारी ने इस बात पर विचार किया कि क्या सिफारिश किया गया पाटनरोधी शुल्क लगाना जनहित के विरुद्ध होगा। यह निर्धारण रिकॉर्ड पर उपलब्ध सूचना तथा घरेलू उद्योग, विदेशी उत्पादकों और उपभोक्ताओं सहित विभिन्न पक्षकारों के हितों पर विचार करने के आधार पर किया गया है।
90. प्राधिकारी ने आयातकों, प्रयोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों सहित सभी हितबद्ध पक्षकारों से विचार आमंत्रित करते हुए राजपत्र अधिसूचना जारी की। प्राधिकारी ने प्रयोक्ताओं के लिए एक प्रश्नावली भी निर्धारित की, ताकि वे वर्तमान जांच के संबंध में संगत सूचना दे सकें, जिसमें उनके प्रचालन पर पाटनरोधी शुल्क का संभावित प्रभाव भी शामिल है। प्राधिकारी ने अन्य बातों के साथ-साथ, विभिन्न देशों से विभिन्न आपूर्तिकर्ताओं द्वारा आपूर्ति किए जाने वाले उत्पाद की परस्पर परिवर्तनशीलता, दूसरे स्रोतों में जाने की क्षमता, उपभोक्ताओं पर पाटनरोधी शुल्क के प्रभाव, उन कारकों जो पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से आने वाली नई स्थिति में समायोजन को बढ़ाने अथवा उसमें विलंब करने की संभावना दर्शाते हैं, के संबंध में सूचना मांगी।
91. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सामान्य रूप से पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य पाटन की अनुचित व्यापार परिपाटियों से घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को समाप्त करना है, ताकि भारतीय बाजार में खुली और निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा की स्थिति को फिर से स्थापित किया जा सके।
92. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से आयात प्रतिबंधित नहीं होते हैं। आयात उचित कीमतों पर होते रहेंगे। पाटनरोधी शुल्क यह सुनिश्चित करता है कि आयात उचित कीमतों पर भारतीय बाजार में प्रवेश कर रहे हैं और विदेशी निर्यातकों और आवेदक के बीच एक समान अवसर बना हुआ है।
93. प्राधिकारी ने एक आर्थिक हित प्रश्नावली निर्धारित की और सभी हितबद्ध पक्षकारों से अनुरोध आमंत्रित किए। उत्तरदाताओं में से केवल घरेलू उद्योग ने प्रश्नावली में किसानों पर प्रस्तावित पाटनरोधी शुल्क के संभावित प्रभाव के संबंध में मात्रात्मक सूचना प्रस्तुत की। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के इस कथन पर ध्यान दिया कि 1 किलोग्राम बीज के उपचार में, विचाराधीन उत्पाद के केवल 2-2.5 ग्राम का उपयोग किया जाता है। मौजूदा कीमतों पर, 2 ग्राम थिरम की कीमत 0.50 रु. से कम होने का अनुमान है, और 30% का पाटनरोधी शुल्क लगाने से बीज की कीमत लगभग 0.15 रु. प्रति किलोग्राम बढ़ जाएगी। अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने घरेलू उद्योग के उपर्युक्त तर्क पर विवाद नहीं किया है।
94. अपने लिखित अनुरोध में, आयातक ने आलू की खेती से संबंधित एक उदाहरण का हवाला देते हुए पाटनरोधी शुल्क के प्रभाव को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। यह अनुरोध किया गया है कि बीज उपचार के लिए थिरम निर्माण के उपयोग से 20% पाटनरोधी शुल्क के कारण प्रति एकड़ 350 रु. की अतिरिक्त लागत आएगी। हालाँकि, आयातक ने अपनी गणना में उपयोग की गई कृषि संबंधी अवधारणाओं को प्रमाणित करने के लिए कोई सहायक साक्ष्य या दस्तावेज उपलब्ध नहीं कराया है - जैसे कि प्रति एकड़ बीज की आवश्यकता, थिरम की खुराक का स्तर, या उपचार लागत संरचना।
95. तदनुसार, प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से कृषि कार्यों की लागत संरचना पर कोई खास असर नहीं पड़ेगा। इसके विपरीत, उचित कीमतों पर थिरम की दीर्घकालिक

उपलब्धता सुनिश्चित करने, घरेलू उत्पादकों की व्यवहार्यता बनाए रखने, आयात पर अत्यधिक निर्भरता कम करने और बीज उपचार में उपयोग किए जाने वाले एक आवश्यक कृषि रसायन की आपूर्ति स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए शुल्क लगाना आवश्यक है। अतः, प्राधिकारी यह पाते हैं कि प्रस्तावित पाटनरोधी शुल्क सार्वजनिक हित के विरुद्ध नहीं है और यह भारतीय किसानों पर कोई अनुचित बोझ डाले बिना निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा की रक्षा करने के व्यापक उद्देश्य के अनुरूप है।

ट. प्रकटन पश्चात् टिप्पणियां

ट.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

96. प्रकटन विवरण पर अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- i. प्राधिकारी ने वाइन और अंगूर उत्पादों - संयुक्त राज्य अमेरिका के संबंध में 28 अप्रैल 1992 को सब्सिडी और प्रतिसंतुलनकारी उपायों संबंधी समिति द्वारा अपनाई गई पैनल की रिपोर्ट पर विचार नहीं किया है। थिरम टेक्निकल और थिरम फॉर्मूलेशन दोनों तकनीकी रूप से और साथ ही व्यावसायिक रूप से प्रतिस्थापनीय नहीं हैं और क्या उन्हें समान वस्तु माना जा सकता है।
- ii. प्राधिकारी ने हमारे इन अनुरोधों पर भी विचार नहीं किया कि उत्पाद को समान वस्तु के रूप में मानने के लिए दो-तरफा प्रतिस्थापनीयता आवश्यक है, जैसा कि प्राधिकारी ने विभिन्न अंतिम जांच परिणामों में किया है।
- iii. प्राधिकारी ने कानून या न्याय-व्यवस्था भी नहीं दी है जिसमें मूल/नई जांच में शुल्कों की प्रवचना के बहाने माननीय प्राधिकारी को विचाराधीन उत्पाद में उत्पादों को शामिल करने के अधिकार का प्रावधान है।
- iv. प्राधिकारी ने भारतीय बाजार में उपलब्ध अर्थक्षम प्रतिस्थापनों के कारण बिक्री की हानि से संबंधित कोई विश्लेषण नहीं किया है, क्योंकि प्रतिस्थापनों की उपलब्धता का कारणात्मक संपर्क के साथ-साथ क्षति निर्धारण पर सीधा प्रभाव पड़ता है।
- v. प्राधिकारी से अनुरोध है कि वह पुष्टि करें कि क्या मालभाड़ा निवल वसूली में शामिल है अथवा नहीं, क्या मालभाड़ा बिक्री लागत और बिक्री कीमत दोनों में शामिल नहीं है।
- vi. प्राधिकारी से अनुरोध है कि वह पुष्टि करें कि विश्लेषण में फॉर्मूलेशन के आंकड़ों पर भी विचार किया गया है।
- vii. आयात कीमतें घरेलू उद्योग की लागत से बहुत अधिक हैं और इसलिए, प्राधिकारी को निचले स्तर के प्रयोक्ताओं के हित में शुल्क न लगाने की सिफारिश करनी चाहिए।

ट.2 आवेदक द्वारा अनुरोध

97. प्रकटन विवरण पर आवेदक द्वारा निम्नलिखित टिप्पणियां दायर की गई हैं:

- i. उत्पादन मूल्य के आधार पर दोनों फॉर्मों के बीच खर्च का आवंटन उचित नहीं है, थिरम टेक्निकल का मूल्य भी फॉर्मूलेशन के मूल्य में शामिल है।
- ii. यद्यपि प्राधिकारी ने स्वीकार किया है कि तकनीक से जांच तक एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया नहीं है, तकनीक से फॉर्मूलेशन तक उत्पादन प्रक्रिया एक मात्र वृद्धिशील प्रक्रिया है। यद्यपि, प्राधिकारी ने उत्पादन मूल्य अनुपात के आधार पर खर्च आवंटित किया है। प्रकटन विवरण विचाराधीन उत्पाद के निर्धारण और क्षतिरहित कीमत के निर्धारण के लिए विभिन्न मानकों पर आधारित है।
- iii. जबकि 1 एमटी थिरम का औसत उत्पादन घंटे *** घंटे है। फॉर्मूलेशन के मामले में यह केवल *** घंटे है। क्योंकि थिरम टेक्निकल के उत्पादन में प्रमुख उत्पादन घंटे खर्च होते हैं, थिरम टेक्निकल में प्रमुख लागतें जुड़ी हुई हैं। उपयुक्त अनुपात के रूप में उत्पादन मूल्य पर विचार करने से थिरक तकनीक की अनुचित रूप से कम लागत बनती है।

- iv. दायर किए गए सत्यापन दस्तावेजों में आवेदक ने वास्तविक उत्पादन घंटों का साक्ष्य दिया है। यह जांच की अवधि के बाद से संबंधित हैं। जांच की अवधि के लिए दस्तावेज भौतिक सत्यापन के समय नहीं दिखाए जा सकते क्योंकि ये दस्तावेज अन्य सरकारी विभाग के कब्जे में हैं।
- v. यह तथ्य कि भौतिक सत्यापन के समय जांच की अवधि के लिए प्रासंगिक रिकॉर्ड नहीं दिखाए जा सके, उत्पादन घंटों को अपनाने के लिए कोई सीमा नहीं है। उत्पादन घंटों को बाद की अवधि के रिकॉर्ड से भी निर्धारित किया जा सकता है। ऐसा नहीं है कि जांच की अवधि में खपत किए गए उत्पादन घंटे जांच की अवधि के बाद खपत किए गए उत्पादन घंटों से भिन्न होते।
- vi. उत्पादन मूल्य को अनुपात के रूप में मानने से विनिर्माण लागत में कम से कम ***रुपये प्रति एमटी की कमी आई है।
- vii. प्राधिकारी ने थिरम टेक्निकल और निर्माण के बीच उत्पादन मूल्य के आधार पर अचल परिसंपत्तियों का आबंटन किया है। यह दृष्टिकोण प्रकटन में प्राधिकारी के दृष्टिकोण से असंगत है जिसमें यह माना गया है कि थिरम टेक्निकल में प्रमुख संयंत्र और उपकरण और निवेश शामिल हैं।
- viii. डीजीटीआर ने थिरम टेक्निकल के मामले में ***% के उत्पादन मूल्य अनुपात का परिकलन किया है। तथापि, यह उत्पादन मूल्य अनुपात कम है। उत्पादन मूल्य अनुपात कम से कम ***% होना चाहिए। कैप्टिव रूप से अंतरित इनपुट के लिए उत्पादन मूल्य के गलत मूल्य के कारण निर्धारित उत्पादन मूल्य अनुपात कम है।
- ix. कच्चे माल की खपत का अनुपात उत्पादन मूल्य अनुपात से अधिक उपयुक्त है। ऐसा इस तथ्य के कारण है कि देश में उत्पाद के पाटन के कारण तकनीक की कीमतें अत्यधिक न्यूनीकृत हैं।
- x. प्रकट की गई क्षति रहित कीमत से, एलपीजी लागत को थिरम तकनीक और थिरम फॉर्मूलेशन के बीच आबंटित किया गया है। एलपीजी लागत को फॉर्मूलेशन में आबंटित नहीं किया जा सकता है। संपूर्ण एलपीजी लागत को केवल तकनीक में ही लगाया जाना आवश्यक है।
- xi. यद्यपि आवेदक को वास्तविक क्षति हुई है, तथापि प्रयोक्ता उद्योग ने कम कीमत वाले आयातों का अनुचित लाभ उठाया है और काफी लाभ कमाया है। चूंकि आवेदक को घरेलू बाजार में थिरम तकनीक को बेचना मुश्किल हो रहा है, इसलिए इसके उत्पादन प्रभावित हो रहा है जिससे उच्च लागतें बनी हैं। इससे थिरम फॉर्मूलेशन की लागत भी अधिक आ रही है। आवेदक फिर से अन्य फॉर्मूलेटरों के साथ प्रतिस्पर्धा करता है जिनके पास कम लागत की थिरम तकनीक है और लाभकारी कीमतों पर फॉर्मूलेशन बेचने में चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

ट.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

98. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रकटन पश्चात अनुरोधों की जांच की है। यह देखा गया है कि इनमें से अधिकतर अनुरोध उन तर्कों और विवादों की पुनरावृत्ति हैं जिनकी पहले ही जांच की जा चुकी है और जिन्हें इन अंतिम जांच परिणामों के संगत पैराओं में आवश्यक समझी गई सीमा तक हल किया गया है। संक्षिप्तता के लिए, प्राधिकारी ने इस प्रकटन पश्चात जांच में उन टिप्पणियों के उत्तरों को दोहराने से परहेज किया है। तथापि, प्रकटन पश्चात अनुरोधों में पहली बार उठाए गए किसी भी नए अनुरोध, साथ ही वे जिन्हें पहले हल किया गया है परंतु आगे की जांच के लिए आवश्यक समझा गया, का समाधान नीचे किया गया है।
99. तकनीकी और वाणिज्यिक प्रतिस्थापनीयता पर टिप्पणियों के संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि थिरम टेक्निकल थिरम फॉर्मूलेशन के निर्माण में प्रयुक्त आवश्यक सक्रिय घटक है। दोनों उत्पादन श्रृंखला में आंतरिक रूप से जुड़े हुए हैं। थिरम टेक्निकल के बिना, थिरम फॉर्मूलेशन का उत्पादन नहीं किया जा सकता है और थिरम टेक्निकल का थिरम फॉर्मूलेशन के उत्पादन के अलावा कोई अन्य उपयोग नहीं है।

फॉर्मूलेशन फॉर्म को शामिल करना अतिरिक्त रूप से महत्वपूर्ण और आवश्यक है, इस तथ्य पर विचार करते हुए कि तकनीक से फॉर्मूलेशन में रूपांतरण की प्रक्रिया केवल वृद्धिशील है।

100. इस टिप्पणी के संबंध में कि घरेलू बिक्री में कमी घरेलू बाजार में अन्य प्रतिस्थापनीय उत्पाद की उपलब्धता के कारण है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद की आयात मात्रा देश में मांग की तुलना में देखे जाने पर काफी है। आयात की इतनी अधिक मात्रा और घरेलू उद्योग की कम घरेलू बिक्री के साथ, यह नहीं माना जा सकता कि घरेलू बिक्री का नुकसान अन्य प्रतिस्थापनीय उत्पादों की उपलब्धता के कारण है। यह भी नोट किया जाता है कि यद्यपि हितबद्ध पक्षकारों ने प्रतिस्थापनीय उत्पादों की एक सूची दी है, तथापि घरेलू उद्योग ने तर्क दिया कि अधिकतर उत्पाद देश में वाणिज्यिक रूप से उत्पादित नहीं होते हैं और इन उत्पादों की कीमत विचाराधीन उत्पाद की तुलना में बहुत अधिक है। हितबद्ध पक्षकारों ने इन उत्पादों के बीच तकनीकी और वाणिज्यिक प्रतिस्थापन के अस्तित्व का कोई साक्ष्य नहीं दिया है। अतः, प्राधिकारी ने अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्क में कोई औचित्य नहीं पाया।
101. जहां तक इन टिप्पणियों का संबंध है कि क्या भाड़ा लागत निवल बिक्री वसूली का भाग है, जारी किए गए प्रकटन विवरण में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि यद्यपि बिक्री कीमत न्यूनीकरण/ह्रास के मूल्यांकन के लिए ध्यान में रखी गई है, तथापि कीमत कटौती का परिकलन निवल बिक्री कीमत पर विचार करते हुए किया गया है। लागू सीमा तक माल ढुलाई, छूट और कमीशन जैसे व्यय को निवल बिक्री कीमत की गणना के लिए बाहर रखा गया है।
102. एनआईपी के निर्धारण के लिए प्राधिकरण द्वारा अपनाई गई कार्यप्रणाली के संबंध में, यह ध्यान दिया जाता है कि घरेलू उद्योग ने विभिन्न खर्चों के लिए विभिन्न आवंटन पद्धति को अपनाया है यानी विनिर्माण व्यय तक खर्चों के लिए उत्पादन घंटे का अनुपात, पोस्ट मैनुफैक्चरिंग खर्चों के लिए बिक्री मूल्य अनुपात, आदि। साइट पर सत्यापन के दौरान, घरेलू उद्योग समर्थन साक्ष्य के साथ उत्पादन घंटों के संबंध में अपने दावे को प्रमाणित नहीं कर सका। इसलिए, प्राधिकरण ने विनिर्माण तक सामान्य खर्चों के आवंटन के लिए उत्पादन मूल्य अनुपात को अपनाया है, जो कि सबसे उपयुक्त कार्यप्रणाली है जो लगातार लागू होती है। यह ध्यान दिया जा सकता है कि घरेलू उद्योग ने बिक्री मूल्य अनुपात के आधार पर सामान्य खर्चों को आवंटित करके पीयूसी के लिए पोस्ट मैनुफैक्चरिंग खर्चों का दावा किया था, जिसे उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि उन्होंने निचले पक्ष में गलत तरीके से गणना की है। घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए खर्चों के आवंटन के संबंध में सभी सामग्री को प्राधिकरण के सुसंगत अभ्यास के अनुसार उचित रूप से संबोधित किया गया है।

ठ. निष्कर्ष

103. उठाए गए तर्कों, उपलब्ध कराई गई सूचना तथा हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों और प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, जैसा कि उपर्युक्त जांच परिणाम में रिकॉर्ड किया है, और पाटन, क्षति और घरेलू उद्योग के साथ कारणात्मक संपर्क के उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी निम्नलिखित निष्कर्ष निकालते हैं:
- क. विचाराधीन उत्पाद किसी भी रूप में थिरम है, जिसमें उसका तकनीकी और निर्माण रूप भी शामिल है। उत्पाद के क्षेत्र में थिरम तकनीक और थिरम निर्माण शामिल हैं। थिरम के सभी रूप विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र में हैं।

- ख. यद्यपि विचाराधीन उत्पाद तकनीकी रूप में आयात किया गया है, तथापि इसकी खपत केवल निर्माण रूप में की गई है। तकनीकी रूप की कोई खपत नहीं हुई है। तकनीक से निर्माण रूप में परिवर्तन केवल एक वृद्धिशील प्रक्रिया है। थिरम तकनीक और थिरम निर्माण अलग-अलग उत्पाद नहीं हैं, बल्कि एक ही उत्पाद के विभिन्न चरण हैं।
- ग. घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्ति किया गया उत्पाद आयातित उत्पाद के समान वस्तु है।
- घ. आवेदक नियमावली के नियम 2(ख) के अभिप्राय से 'घरेलू उद्योग' है। आवेदक के अलावा, विचाराधीन उत्पाद के दो अन्य उत्पादक हैं। दोनों ने वर्तमान जांच का समर्थन किया है।
- ङ. आवेदन-पत्र नियम 5(3) के अनुसार आधार के मानदंड पूरा करता है। आवेदक का उत्पादन कुल भारतीय उत्पादन में प्रमुख अनुपात है।
- च. यूरोपीय संघ के किसी भी निर्यातक ने जांच में भाग नहीं लिया है। अतः, उपलब्ध तथ्यों के आधार पर सामान्य मूल्य निर्धारित किया गया है। निर्यात कीमत डीजी सिस्टम डेटा, और निर्यातकों के कारखानागत स्तर तक किए गए खर्चों के संबंध में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित की गई है।
- छ. संबद्ध सामानों के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर विचार करते हुए, संबद्ध देश से संबद्ध सामानों के लिए पाटन मार्जिन निर्धारित किया गया है। यह देखा जाता है कि पाटन मार्जिन काफी सकारात्मक है। इस प्रकार यह सिद्ध है कि विचाराधीन उत्पाद के आयात भारतीय बाजार में काफी पाटित कीमतों पर आए हैं।
- ज. भारत में मांग-आपूर्ति का कोई अंतर नहीं होने के बावजूद, यूरोपीय संघ से आयात भारतीय खपत में भारी हिस्सा रखते हैं। इसके अतिरिक्त, ये आयात भारत में उत्पादन के संबंध में काफी अधिक हैं। ये आयात देश में उत्पाद के आयात का 100% है।
- झ. जब भारतीय उद्योग के पास संपूर्ण भारतीय मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त क्षमताएं होती हैं, तब भी भारतीय खपत में आयात का भारी हिस्सा होता है।
- ञ. थिरम तकनीक की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से वास्तविक रूप से कम है।
- ट. क्षति अवधि के दौरान, बिक्री कीमत में वृद्धि बिक्री की लागत में वृद्धि के अनुरूप नहीं रही है और घरेलू उद्योग की कीमतें न्यूनीकृत हैं।
- ठ. पाटित आयातों के द्वारा धारित भारी हिस्से के कारण देश में काफी मांग के बावजूद पूरी क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का उत्पादन, क्षमता उपयोग और घरेलू बिक्री बेहद कम रही हैं।
- ड. पाटित कीमतों पर आयातित तकनीकी फार्म की उपलब्धता से घरेलू उद्योग की बिक्री और फॉर्मूलेशन की कीमतें दोनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।
- ढ. क्षति अवधि के दौरान लाभ, नकद लाभ और निवेश पर आय के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में तेजी से गिरावट आई है। जांच की अवधि में घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटा, नकद घाटा और नियोजित पूंजी पर नकारात्मक आय हुई है।
- ण. घरेलू उद्योग ने क्षति अवधि के दौरान मात्रा और कीमत मापदंडों में नकारात्मक वृद्धि दर्ज की है।
- त. भारतीय उद्योग के पास देश में संपूर्ण मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त क्षमता है, लेकिन भारतीय उद्योग का हिस्सा क्षति अवधि के दौरान अधिकतम 40% तक पहुंच गया है, जिसमें पाटित आयातों का भारी हिस्सा है।
- थ. जांच में ऐसा कोई अन्य कारक नहीं दिखाया गया है, जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो।
- द. आवेदक अन्य फॉर्मूलेटरों के साथ प्रतिस्पर्धा करता है, जिनके पास कम लागत वाली थिरम तकनीक तक पहुंच है। पाटित आयातों तक पहुंच ने फॉर्मूलेशन के संबंध में घरेलू उद्योग के प्रचालन पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाला है।

- ध. घरेलू उद्योग को व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से उत्पाद के तकनीकी और फॉर्मूलेशन दोनों रूपों में क्षति हुई है।
- न. आर्थिक हित प्रभावली जारी करने के बावजूद, उत्पाद के उपभोक्ताओं ने इस बात का कोई परिमाणीकरण नहीं दिया है कि प्रस्तावित पाटनरोधी शुल्क लगाने से निचले स्तर के उद्योग और आम जनता पर किस तरह प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।
- प. घरेलू उद्योग ने प्रस्तावित शुल्क के प्रभाव का परिमाणीकरण किया और यह दर्शाया कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से अंतिम उपभोक्ता और आम जनता पर नगण्य प्रभाव पड़ेगा।
- फ. उत्पाद, उद्योग की प्रकृति और पाटित आयातों से हुई क्षति की सीमा को देखते हुए, प्राधिकारी का मानना है कि पांच (5) वर्षों की अवधि के लिए पाटनरोधी शुल्क लगाना सार्वजनिक हित के विरुद्ध नहीं होगा और यह आवश्यक और उचित है।

ड. सिफारिश

104. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच शुरू की गई थी और सभी हितबद्ध पक्षकारों को अधिसूचित की गई थी तथा पाटन, क्षति और कारणात्मक संपर्क के पहलू पर सकारात्मक सूचना प्रदान करने के लिए घरेलू उद्योग, निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। पाटनरोधी नियमावली के तहत निर्धारित प्रावधानों के अनुसार पाटन, क्षति और कारणात्मक संपर्क के संबंध में जांच शुरू करने और जांच करने पर प्राधिकारी का यह मत है कि पाटन और क्षति को दूर करने के लिए शुल्क लगाए जाने की आवश्यकता है। अतः प्राधिकारी इसे आवश्यक समझते हैं और संबद्ध देशों से संबद्ध सामानों के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करते हैं।
105. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी कमतर पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन के बराबर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को क्षति समाप्त की जा सके। तदनुसार, प्राधिकारी निम्नलिखित शुल्क तालिका में कॉलम 7 में उल्लिखित राशि के बराबर, केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से 5 वर्षों की अवधि के लिए संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध सामानों के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करते हैं

शुल्क तालिका

क्र. सं.	शीर्ष/उप शीर्ष*	सामानों का विवरण	मूल देश	निर्यात का देश	उत्पादक	राशि	यूओएम	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)
1	3808 92 30	किसी भी रूप में थिरम	यूरोपीय संघ	यूरोपीय संघ सहित कोई देश	कोई	733	एमटी	अम.डा.
2	-वही-	-वही-	यूरोपीय संघ को छोड़कर कोई देश	यूरोपीय संघ	कोई	733	एमटी	अम.डा.

* सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है तथा विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।

ढ. आगे की प्रक्रिया

106. इन अंतिम जांच परिणामों के कारण प्राधिकारी के आदेश के विरुद्ध आने वाली कोई अपील अधिनियम के संगत प्रावधानों के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय अधिकरण के समक्ष की जाएगी।

दर्पण जैन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(Directorate General of Trade Remedies)

FINAL FINDINGS

New Delhi, the 15th May 2025

Case No. AD (OI) 16/2024

Subject: Anti-dumping investigation concerning imports of ‘Thiram in any form’ originating in or exported from the European Union.

A. BACKGROUND OF THE CASE

F. No. 6/18/2024-DGTR.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time (hereinafter referred to as “the Act”) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended from time to time (hereinafter referred as the “Anti-Dumping Rules” or “the Rules”) thereof,

1. Swarup Chemicals Private Limited (hereinafter referred to as the “domestic industry” or “applicant”) has filed a duly substantiated application before the Designated Authority (hereinafter referred to as the “Authority”) for initiation of anti-dumping investigation concerning imports of Thiram in any form (hereinafter referred to as “product under consideration” or “PUC” or “subject goods”), from the European Union (hereinafter referred to as the “subject country”). Further, the application has been supported by Ambachem Industries and Sudama Chemtech Pvt. Ltd.
2. The Authority, on the basis of prima facie evidence submitted by the applicant, issued a public notice vide Notification No. 6/18/2024-DGTR dated 29th June 2024, published in the Gazette of India – Extraordinary, initiating the subject investigation in accordance with the Section 9A of the Act read with Rule 5 of the Rules to determine the existence, degree and effect of the alleged dumping of the subject goods originating in or exported from the subject country and to recommend the amount of anti-dumping duty, which if levied, would be adequate to remove the alleged injury to the domestic injury.

B. PROCEDURE

3. The procedure described below has been followed with regard to the investigation:
 - a. The Authority notified the embassy of the subject country in India about the receipt of the present anti-dumping application before proceeding to initiate the investigation in accordance with Rule 5(5) of the Anti-Dumping Rules.

- b. The Authority issued a public notice dated 29th June 2024, published in the Gazette of India Extraordinary, initiating the anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods from the subject country.
- c. The Authority sent a copy of the initiation notification to the embassy of the subject country in India, the known producers and exporters from the subject country, the known importers/users in India, and the other interested parties, as per the addresses made available by the applicant. The interested parties were asked to provide relevant information in the form and manner prescribed in the initiation notification and make their submissions known in writing within the time limits prescribed in the initiation notification.
- d. The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application filed by the applicant to the known producers/exporters and to the embassies of the subject country in India in accordance with Rule 6(3) of the Rules.
- e. The embassy of the subject country in India was also requested to advise the exporters/producers to submit their responses to the questionnaire within the prescribed time limit.
- f. The Authority sent exporter's questionnaire to the following known producers/ exporters in the European Union in accordance with Rule 6(4) of the Rules:

SN	Name of producers/exporters in the subject country
i.	Taminco Bv
ii.	Bayer AG
iii.	IPT Pergande GMBH

- g. In response to the above, none of the producers/exporters from the European Union have responded and filed exporter's questionnaire response.
- h. The Authority also sent questionnaire to the following known importers/users of the product under consideration in India calling necessary information in accordance with the Rule 6(4) of the Rules: -

SN	Name of users/importers of the product under consideration in India
i.	Bayer Vapi Pvt Ltd/ Bayer Crop Science Ltd
ii.	Indofil Industries Limited
iii.	Meenakshi Agro Chemicals
iv.	JMF Performance Materials Pvt Ltd
v.	Crop Care Federation of India
vi.	Bulk Drugs Manufacturers Association (India)
vii.	Indian Drug Manufacturers' Association

- i. In response to the questionnaire issued, Meenakshi Agro Chemicals has filed a user questionnaire response.
- j. Further, a submission was received from the European Commission and has been addressed in the final findings.
- k. Exporters, foreign producers and other interested parties who have not responded or not supplied relevant information to this investigation, have been treated as non- cooperating interested parties.
- l. The Authority issued an Economic Interest Questionnaire to all the known producers and exporters, importers, and the applicant. The economic interest questionnaire was also shared with the administrative line ministry. Only the applicant has filed the economic interest questionnaire. No other interested party has filed an economic interest questionnaire.

- m. The Authority had received letters from Gujarat Seed Industry Association, Seedsmen Association, Seed Industries Association of Maharashtra requesting to terminate the subject investigation. Their submissions have been considered in the present final findings.
- n. The period of investigation (POI) for the purpose of present investigation is 1st January 2023 to 31st December 2023 (12 months). The injury analysis period covers 2020-21, 2021-22, 2022-23 and the period of investigation.
- o. The interested parties were granted an opportunity to present their comments on the scope of the PUC and propose PCNs, if required, within a period of 30 days from the date of the initiation of the investigation. Subsequently, a meeting was held on 14th August 2024 to discuss the scope of the PUC and the PCN methodology.
- p. Based on the submissions received from the interested parties, the scope of the product under consideration and the PCN methodology for the investigation was notified on 18th October 2024.
- q. A list of all the interested parties was uploaded on the DGTR website along with the request therein to all of them to email the non-confidential version of their submissions to all the other interested parties.
- r. In accordance with Rule 6(6) of the Rules, the Authority provided an opportunity for the interested parties to present their views orally in a public hearing held on 7th February 2025 in hybrid mode. The parties who presented their views in the oral hearing were requested to file written submissions of the views expressed orally, followed by rejoinder submissions, if any.
- s. The information provided by the interested parties on a confidential basis was examined with regard to the sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to the other interested parties. Wherever possible, parties providing information on a confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential versions of the information filed on a confidential basis.
- t. A request was made to the DG System to provide transaction-wise details of the imports of the subject goods for the injury period including the period of investigation. The same was received by the Authority and has been considered in this final findings.
- u. The Authority conducted the verification of the information provided by the applicant and other interested parties to the extent considered necessary for the purposes of the present investigation.
- v. The non-injurious price (hereinafter referred to as the 'NIP') has been determined based on the cost of production and reasonable profits of the subject goods in India, based on the information furnished by the applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and Annexure III to the AD Rules, 1995 so as to ascertain whether anti-dumping duties lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.
- w. The Authority circulated the disclosure statement containing all essential facts under consideration for making the final recommendations to the Central Government to all interested parties on 13 April 2025. The Authority has examined all the post-disclosure comments made by the interested parties in these final findings to the extent deemed relevant. Any submission which was merely a reproduction of the previous submission and which had been adequately examined by the Authority has not been repeated for the sake of brevity.
- x. The Authority has considered all the arguments raised and information provided by all the interested parties to the extent the same is supported with evidence and considered relevant to the present investigation.
- y. "****" in this final findings represents information furnished by an interested party on a confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

z. The exchange rate adopted by the Authority for the subject investigation is 1 US\$=Rs. 83.52.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

4. At the stage of initiation, the product under consideration was defined as under:

“3. The product under consideration in the present investigation is Thiram in any form including its technical and formulation form.

4. Thiram is used as a fungicide to prevent crop damage in the field and to prevent crops from deterioration in storage or transport. Thiram is also used as a seed, nut, fruit, and mushroom disinfectant from a variety of fungal diseases. In addition, it is used as an animal repellent to protect fruit trees and ornamentals from damage by rabbits, rodents, and deer. Thiram has been used in the treatment of human scabies, as a sunscreen, and as a bactericide applied directly to the skin or incorporated into soap.

5. The product under consideration is classified under Chapter 38 of the Customs Tariff Act, 1975 under heading 3808 92 30 of the Tariff Classification. The product under consideration has a dedicated classification. The customs classification is only indicative and the same is not binding on the scope of the investigation.”

C.1 Submission of the other interested parties

5. The other interested parties have made the following submissions with regard to the scope of product under consideration and like article.

- a. Thiram Formulation should be excluded from the scope of the product under consideration.
- b. Thiram formulation is neither imported nor importable into India and goods which are not imported cannot be included in the scope. Besides, the provisions of circumvention cannot be invoked as they are applicable only when the duties are imposed.
- c. The import of formulation requires a specific license. There is not a single license for the entire formulation category.
- d. None of the Indian importers nor other foreign suppliers (including European suppliers) have CIBRC registration for Thiram Formulation.
- e. Obtaining license is a costly and time-intensive process spanning 3 to 4 years. This includes submitting test reports across two seasons over two years, with final product approval contingent upon CIBRC's rigorous evaluation and decision, often specific to the intended seed.
- f. To project that users of Thiram technical will shift to Thiram Formulation if duties are imposed on Thiram Technical is misleading.
- g. Thiram technical and formulation cannot be considered as like article in terms of Rule 2(d) of the Rules as they are not technically and commercially substitutable.
- h. Thiram Technical is pure, active and cannot be used on the seeds directly. Thiram Formulation has good surfactants and upon approval of CBIC is allowed to be sold/manufacture in India. It is available in a variety of formulations i.e. WS, DS, FS and FF.
- i. Formulation is conversion of Technical into a suitable lower concentration product and it costs minimum 15% for Powder Formulation and more than 40% for Formulation of FS formulation, as it requires grinding through dyno mills, chilling process, manpower, surfactants and carriers.

- j. In the panel report adopted by the Committee on Subsidies and Countervailing Measures on 28 April 1992 - Concerning Wine and Grape Products - United States - Definition of Industry, it was concluded that since two separate industries existed for wine-grape growers and wineries, therefore, both cannot be said to be of same industry. Same principle should be applied here.
- k. The applicant has relied on the combined investigation of Hot and Cold Rolled products ignoring the fact that separate investigations for these products were also conducted and concluded. Decisions by quasi-judicial bodies are binding only on the specific parties involved in the original case.
- l. Since the respondent was not party to any of the previous investigations cited by the applicant industry, there had been no occasion for the Authority to deal with or address the issues raised herein.
- m. The applicant has withheld critical information relating to purchase of imported subject goods from respondent during the injury investigation period, requirement of registration of Thiram Formulation with CIBRC and currently no foreign supplier has license to export Thiram formulation to India.
- n. Amisulbrom, Azoxystrobin, Aureofungin, Bitertano, Captan etc. are some of the substitutes which can replace Thiram in the domestic market.

C.2 Submission of the applicant

- 6. The applicant has submitted as follows with regards to the scope of the product under consideration and like article:
 - a. Thiram in formulation form is not imported from the European Union currently. Due to high water content, transporting thiram in formulation form is commercially unviable due to higher shipping costs. Only thiram in technical form is imported from the European Union.
 - b. Thiram technical can be converted into lower concentration (formulation) by incurring an incremental cost in the region to 9-10%.
 - c. In case formulation is kept outside the scope of the measures, import price of formulation shall become lower than the price of technical after imposition of anti-dumping.
 - d. The product produced by the applicant and imports from the subject country share similar characteristics, manufacturing processes, and uses, making them commercially interchangeable.
 - e. Thiram technical is the concentrated form of the chemical compound, which is used as the base to prepare formulation. Thiram formulation is ready-to-use product that contains thiram as the active ingredient, but in a diluted or prepared form for application.
 - f. There is no specific provision in the WTO Anti-Dumping Agreement which provides for the parameters for determination of the product under consideration.
 - g. Thiram does not have independent use and must be compulsory processed into formulation.
 - h. Converting thiram to formulation involves simple dilution with low-cost solvents like China clay, S.C.M.C., SUNISPERSE, making it a minor incremental process. In the total raw material cost of formulation, cost of technical alone amounts to 90-95%.
 - i. While average production hours of 1 MT of thiram is *** hrs, time in case of formulation is only *** hrs.
 - j. The per unit investment in case of technical is more than Rs *** per MT while the per unit investment in case of formulation is in the region of Rs *** per MT.
 - k. If the cost of other raw materials purchased from the market is excluded, cost of technical alone is around 90% of the cost of formulation. Value addition between technical to formulation is 0-10%.

- l. All forms of thiram must be included under the scope; otherwise, imports will shift from the technical form to the formulation.
- m. The major producer in European Union can supply both the forms of the product under consideration and therefore, inclusion of both is required.
- n. In various past investigations, the Authority has included both the product under consideration and its intermediate or further processed forms inside the same scope.
- o. Various authorities globally include wide range of products inside the scope of the product under consideration. The USITC expanded the scope of its investigation into imports of 2,4-D to include all herbicides containing 2,4-D, covering around 1,500 products made from 2,4-D.
- p. In the investigations for CVP-23 and Phthalocyanine pigments, US and China have included both the intermediate and finished forms of products in the scope of the product under consideration despite no direct exports of these intermediates.
- q. The imports of the product fall under free category. If user or importer can obtain a license for technical, it can very well obtain license for formulation.
- r. The other interested parties have not shown that obtaining a license for technical is impossible.
- s. The fact that the formulator has an extensive product portfolio demonstrates that formulation is neither a complex technology nor a significant process but merely converting a technical form to formulation form so that it can be used by the consumers.
- t. If technical and formulation have different licensing requirements, it does not mean that the product is different.
- u. Formulation is required to be included in any case for injury analysis, as imports of technical form have caused damage to formulation. It is the injury suffered in formulation which has in turn impacted technical.
- v. The price of the product under consideration is much lower than the other “substitutes” available in market. The interested party has not established that these products are technical and commercial substitutes to the product under consideration.
- w. Products which have been claimed as “substitutes” command significant higher prices than thiram formulations. Some products have been claimed as “substitutes” but it is the understanding of the applicant that there is no manufacturer of these products.

C.3 Examination by the Authority

7. At the time of initiation, the product under consideration was considered “Thiram in any form including its technical and formulation form”.
8. It is noted that Thiram is widely employed as a fungicide to prevent crop damage. Thiram is also used as a seed, nut, fruit, and mushroom disinfectant from a variety of fungal diseases. In addition, it is used as an animal repellent to protect fruit trees and ornamentals from damage by rabbits, rodents, and deer. Thiram has been used in the treatment of human scabies, as a sunscreen, and as a bactericide applied directly to the skin or incorporated into soap.
9. The product under consideration is classified under Chapter 38 of the Customs Tariff Act, 1975 under heading 3808 92 30 of the Tariff Classification. The product under consideration has a dedicated classification. The customs classification is only indicative and the same is not binding on the scope of the investigation.

10. The Authority invited comments from the interested parties on the proposed PCN methodology and scope of the product under consideration. Thereafter, the Authority held a meeting with all interested parties on 14th August 2024 to finalize the PCN methodology and the scope of the PUC.
11. The Authority after considering submissions made by all interested parties notified the following PCN codes vide notice dated 18th October 2024.

SN	PCN parameter	PCN Code
1	Thiram technical	‘TT’
2	Thiram formulation	‘TF’

12. The interested parties have objected to the inclusion of thiram formulation within the scope of the present investigation, primarily on the grounds that it has not been imported from the European Union and it cannot be imported due to regulatory requirements in India.
13. The Authority finds it pertinent to highlight that the scope of the ‘product concerned’ directly influences the objectives and effectiveness of the investigation. An overly broad product scope may lead to unwarranted protection and introduce unnecessary complexities into the investigative process. Conversely, an overly narrow scope may fall short of addressing the issue of injurious dumping in the domestic market and could result in ongoing injury, as importers or users may circumvent the imposed remedies. Considering these objectives, the Authority would now address the key issues involved as under.
14. Technical Characteristics, Application and Nexus between Technical and Formulation form of the product:- It is undisputed that the essential technical characteristics of the product are inherent in its technical form. However, the technical form alone has no direct use or application and cannot fulfill its intended function without being transformed into a formulation. While the technical form embodies the core technical properties, it is the formulation that delivers the intended functional performance. The technical form is not usable in itself; its sole purpose is to be converted into a formulation.
15. Incremental or distinct manufacturing process-The production of the technical form involves significant technological input, including plant and equipment, investment, skilled labor, and production expertise. On the other hand, converting thiram technical into a formulation primarily involves a simple dilution process using solvents. Thus, the process of conversion from Technical to Formulation is considered incremental and the exclusion of Formulation form from the PUC undermines the objective of a trade remedy measure.
16. Importability: -The interested parties have contended that formulation form of the product is neither imported nor importable. The fact that import of formulation might involve higher transportation cost does not imply that it is not importable. The possibility of importation of formulation from the subject country cannot be ruled out. Exclusion of formulation from the purview of levy of anti-dumping duty may lead to direct export of formulation from the subject country, thereby nullifying the very purpose of entire exercise of providing remedy to the domestic industry against dumping of the product.

17. Licensing: -As regards requirement of a specific license for imports, the authority notes that mere requirement of a license does not imply that the product cannot be imported or may not be imported in future. Licensing requirements and norms are subject to change and are independent of trade remedy actions. The Authority does not consider it appropriate to take them into account for the investigation.
18. In view of the above, the Authority concludes that the scope of product under consideration in the present investigation is Thiram in any form including technical and formulation form.
19. The product under consideration produced by the Indian industry and imported from the subject country are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable and consumers can use them interchangeably. It is concluded that the goods produced by the applicant is like article to the product under consideration imported from the subject country.

D. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY AND STANDING

D.1 Submission made by the other interested parties

20. The other interested parties have submitted as follows with regards to the scope of the domestic industry and standing:
 - a. The applicant has been involved in purchasing imported Thiram Technical during the period of investigation.

D.2 Submission made by the domestic industry

21. The applicant have submitted as follows with regards to the scope of the domestic industry and standing:
 - a. The applicant had purchased thiram in technical form in past from the domestic market due to shortage of supply of raw material.
 - b. The applicant has made no purchases in the period of investigation.
 - c. The applicant alone constitutes 70% share in total Indian production. The applicant along with the supporters constitute entire production in India.
 - d. There are other producers of formulation, but these producers cannot be considered for ascertaining total Indian production. These formulators are importing one form of product under consideration and processing it to make another form.
 - e. The imports and production of technical are already included in calculation of demand. Considering production of these entities will lead to double accounting.
 - f. Since these parties have imported the product under consideration, they cannot be considered as eligible domestic industry. Conversion of technical to Formulation is a small incremental process with a value addition of around 10%.
 - g. Since the major manufacturing process and the investment are required at the stage of technical, it is essential for a producer to produce technical to be considered as eligible domestic producer.

D.3 Examination by the Authority

22. Rule 2(b) of the Anti-Dumping Rules defines domestic industry as under:

“(b) "domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective

output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term 'domestic industry' may be constructed as referring to the rest of the producers."

23. The present application has been filed by Swarup Chemicals Private Limited. The Authority notes that apart from the applicant, there are two other producers of the subject goods in India i.e. Ambachem Industries and Sudama Chemtech Pvt. Ltd. who have supported the application as well. It is noted that these two domestic producers are producing thiram both in technical and formulation form. Further, there are other domestic producers of subject goods which produce thiram in formulation form only.
24. The Authority considers that producers who do not have the manufacturing facilities for production of thiram technical and are engaged in merely converting technical into formulation form cannot be considered domestic industry within the meaning of Rule 2(b) for the reason that the product under consideration in the present investigation includes both the technical and formulation form and these producers have procured one form of the product under consideration and merely converted it to another form. Technical and formulation are merely two forms of the same product with major investment, production technology, manufacturing activities, plant & equipment, employment, raw materials, production skills involved in production of technical form. It is, therefore, essential for the domestic producers to be a manufacturer of technical form in order to be treated as an eligible domestic industry. The producers of formulation form of the product under consideration are procuring technical from either the producers of thiram technical in India or have imported it from the subject country. Since inclusion of such entities would lead to double counting, they have not been included in determination of Indian production and consequently standing.
25. On the submission of the other interested parties that the applicant has imported the product under consideration, Authority has examined the transaction wise import data and found that there are no imports of the product made by the applicant. The applicant has provided a clarification that it had purchased technical thiram from the domestic market prior to the period of investigation. The applicant has provided sufficient reason for the purchases made by it. There are no purchases in the period of investigation.
26. The table below shows the production of the applicant and the supporters (of only Technical Thiram).

SN	Particular	UOM	2020-21	2021-22	2022-23	POI
1	Swarup Chemicals Private Limited	MT	***	***	***	***
	Supporters					
2	Ambachem Industries	MT	***	***	***	***
3	Sudama Chemtech Pvt. Ltd.	MT	***	***	***	***
4	Total Production	MT	327	321	590	485

27. The applicant alone constitutes 70% share in total Indian production. In view of the above, considering the provisions of Rule 2(b) and facts of the case, the Authority concludes that the applicant accounts for a major proportion of the total domestic production of the subject goods. The Authority concludes that the applicant constitutes domestic industry within the meaning of the Rule 2 (b) and satisfy the criteria of standing in terms of Rule 5 (3) of the Rules.

E. CONFIDENTIALITY**E.1 Submission made by the other interested parties**

28. The other interested parties have submitted as follows with regards to confidentiality:
- a. The respondent has given the non-confidential version in accordance with the confidentiality claim accepted by the Authority.
 - b. In any case, most of the information highlighted by the applicant industry is business sensitive and therefore always allowed to be claimed as confidential.
 - c. The applicant industry claimed their costing and pricing information as confidential.

E.2 Submission made by the applicant

29. The applicant has submitted as follows with regards to confidentiality:
- a. The respondent fails to adhere to the Trade Notice 10/2018. Information relating to cost, product, substitute of PUC and quantification of impact has been claimed confidential without providing any reasonable ground.
 - b. Annexures 1-5 and Exhibit 3 of the user questionnaire response have been claimed as completely confidential.
 - c. The user response is grossly deficient as the user has repeated the same exhibit five times in the response. Certain exhibits are also missing from the response.
 - d. The user has alleged that there is another factor which could have caused injury to the industry but the same has been claimed confidential.

E.3 Examination by the Authority

30. The Authority made available non-confidential version of the information provided by various interested parties to all interested parties as per Rule 6(7) and Trade Notice 10/2018 dated 7th September 2018 read with Trade Notice 01/2020 (as extended by the Authority till further notice).

31. With regard to confidentiality of information, Rule 7 of Anti-dumping Rules provides as follows:

“Confidential information: (1) Notwithstanding anything contained in sub-rules (2), (3) and (7) of rule 6, sub-rule(2) of rule 12, sub-rule(4) of rule 15 and sub-rule (4) of rule 17, the copies of applications received under sub-rule (1) of rule 5, or any other information provided to the designated authority on a confidential basis by any party in the course of investigation, shall, upon the designated authority being satisfied as to its confidentiality, be treated as such by it and no such information shall be disclosed to any other party without specific authorization of the party providing such information.

(2) The designated authority may require the parties providing information on a confidential basis to furnish a non-confidential summary thereof and if, in the opinion of a party providing such information, such information is not susceptible to summary, such party may submit to the designated authority a statement of reasons why summarization is not possible.

(3) Notwithstanding anything contained in sub-rule (2), if the designated authority is satisfied that the request for confidentiality is not warranted or the supplier of the information is either unwilling to make the information public or to authorize its disclosure in a generalized or summary form, it may disregard such information.”

32. The submissions made by the applicant and the other interested parties concerning confidentiality, to the extent considered relevant, were examined by the Authority and addressed accordingly. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted, and such

information has been considered confidential and not disclosed to the other interested parties. Wherever possible, parties providing information on a confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential versions of the information filed on a confidential basis. The Authority also notes that all the interested parties have claimed their business-related sensitive information as confidential.

F. DETERMINATION OF NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN

F.1 Submissions made by other interested parties

33. The other interested parties have not made submissions with regard to normal value, export price and dumping margin.

F.2 Submission made by the applicant

34. The applicant has made the following submissions with regard to normal value, export price and dumping margin:

- i. Despite the margins claimed by the applicant, the European producer has not participated in the present investigation.
- ii. The absence of response indicates that the actual normal value in the European market is far higher than the normal value claimed by the applicant.
- iii. Thiram Formulation has been banned in various countries. The European Commission by implementing regulation (EU) 2018/1500 of 9 October 2018 prohibited the use of thiram. Further, the Commission also prohibited the usage of seeds treated with plant protection products containing thiram. Thiram is only approved under Regulation (EU) No 528/2012 of the European Parliament and of the Council (17) for use in biocidal products. As a result, the European producers are now faced with surplus capacities and are exporting the product to other countries at extremely low prices.

F.3 Examination by the Authority

F.3.1 Normal value for the European Union

35. The Authority has noted all the arguments of the interested parties and has examined all relevant aspects of the submissions as under.
36. Under Section 9A(1)(c) of the Act, normal value in relation to an article means:

“the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either-

- (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
- (b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);*

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin."

37. The Authority sent questionnaires to the known producers/exporters in the subject country, advising them to provide information in the form and manner prescribed by the Authority. The Authority notes that none of the producers/exporters from European Union has participated in the present investigation. The Authority has determined normal value at ex-factory level on the basis of facts available in terms of Rule 6(8) of the AD Rules, 1995. The normal value so calculated is provided in the dumping margin table below.

F.3.2 Export Price for the European Union

38. In the absence of cooperation from any producer of the subject country, the Authority has determined the net export price based on the facts available in terms of Rule 6(8) of the AD Rules, 1995 and is provided in the dumping margin table below.

F.3.3 Dumping margin

39. Considering the normal value and the export price determined as explained above, the dumping margin is calculated and shown below.

SN	Particulars	Normal value	Net export price	Dumping margin		
		USD/MT	USD/MT	USD/MT	%	Range
1	Any producer	***	***	***	***	40-50

G. ASSESSMENT OF INJURY

G.1 Submissions made by other interested parties

40. The following submissions have been made by the other interested parties with regards to injury and causal link:
- The volume of the allegedly dumped imports from the EU have decreased by 8% in absolute terms between 2020 and 2023.
 - Imports from the EU have also decreased relative to the applicant's production (-32 index points) and relative to domestic consumption (-8 index points) over the same period.
 - The market share of imports decreased by 14 index points during the period considered, while the market share of the applicant increased significantly (+223 index points).
 - The applicant was able to increase the sales price by 11 index points between 2020 and 2023. Therefore, it is difficult to argue that import prices had a depressive effect on domestic prices.
 - Capacity remained stable throughout the period concerned while capacity utilisation and production increased by 16 index points between 2020 and 2023, and market share increased by 223%.
 - Domestic sales increased by 16 index points and domestic selling price increased by 11 index points; employment remained stable, and wages increased during the injury period (+34 index points).

- g. The demand for the product concerned is remarkably stable. It increases by 4 index points in 2021-22 period, decreases by 2 index points the following year and then reaches the same level in the POI as in the base year (100 index points).
- h. In last 11 years, gradually imports are increasing, due to increased awareness of this product and its efficiency.
- i. Imports are increasing at normal growth rate. The applicant industry has skipped import figures for 2018-19 and 2019-20 to create bias with the Authority about increased imports from the subject country.
- j. The applicant has misrepresented its production capacity, market share, and cost structures in the anti-dumping petition.
- k. The applicant has inflated its cost data by including costs associated with the formulation process in the cost of Thiram Technical, leading to an inaccurate portrayal of injury.
- l. The consolidation of injury data presented by the domestic industry lacks transparency and fails to account for key parameters such as market segmentation, regional demand variations, and differences in product types.
- m. The domestic industry has not provided adequate justification for the methodology used in its injury analysis, particularly concerning the consolidation of data from different product types and the calculation of profit margins and capacity utilization rates.

G.2 Submissions made by the applicant

41. The following submissions have been made by the domestic industry with regard to injury and causal link:
- a. The European Commission by implementing regulation (EU) 2018/1500 of 9 October 2018 prohibited the use of thiram. As a result, the European producers are now faced with surplus capacities and are exporting the product to other countries at extremely low prices.
 - b. Due to the restrictions imposed in European Union, low priced imports started entering the domestic market which led to significant decline in the performance of the applicant.
 - c. Since the primary product being produced is thiram technical, the entire data has been presented in terms of equivalent of thiram technical. There are no imports of thiram formulation.
 - d. The applicant has provided segregated costing as well as injury information for both formulation and technical.
 - e. The demand for the product increased in 2021-22, further increased in the year 2022-23, but declined marginally in the period of investigation.
 - f. The imports from the subject country declined till 2022-23 but have increased again in the period of investigation. The imports increased despite a decline in the demand.
 - g. While the applicant alone could have catered to the entire demand in the country, its share in the period of investigation was less than 27%.
 - h. The volume of imports from European Union have increased sharply in the post period of investigation period almost by 35%.
 - i. The imports from European Union in the post period of investigation have increased with a sharp decline in the import price.
 - j. The imports in relation to production increased in 2021-22, declined in 2022-23 but have increased again in the period of investigation.
 - k. The imports in relation to consumption declined in 2021-22 and have remained at almost same level in the period of investigation.
 - l. The landed price of the subject goods has been far below the selling price of the applicant consistently over the entire injury period. This has resulted in positive price undercutting despite the applicant selling the product at losses.
 - m. The landed price of imports has been continuously below the cost of sales of the applicant.

- n. The prices of the domestic industry have remained depressed in the period of investigation.
- o. The capacity utilisation declined in 2021-22, increased in 2022-23 but has declined in the period of investigation. Even though the applicant has suffered losses with respect to its domestic sales, imports continue to prevent optimum capacity utilization.
- p. The domestic sales of the applicant have increased over the injury period. However, the applicant has been able to sell only because it sold at losses.
- q. The inventory with the applicant has increased over the injury period.
- r. The applicant has been able to meet only 27% of the Indian demand. Further, the market share of the Indian industry as a whole is also only around 40%.
- s. The applicant has been in losses over the entire injury period with only exception in 2022-2023.
- t. The profit before interest and tax improved in 2021-22, turned negative in 2022-23 and then declined steeply in the period of investigation.
- u. The volume and price parameters have remained far below the desired levels to such an extent that the applicant losses cumulated over the injury period are 1/3rd of the fixed assets deployed in the business.
- v. Since the applicant is finding it difficult to sell Thiram Technical in the domestic market, its production is impacted leading to high costs. This is leading to high costs for Thiram Formulation as well.
- w. The cash losses of the applicant have increased substantially and there is an acute shortage of cash flow in the business.

G.3 Examination By Authority

- 42. The Authority has taken note of the submissions made by the interested parties and has examined various parameters in accordance with the Rules after duly considering the submissions made by the interested parties. The injury analysis made by the Authority hereunder *ipso facto* addresses the various submissions made by the interested parties.
- 43. Rule 11 of the Rules read with Annexure II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on the domestic producers of such articles. In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, inventory, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the Rules.
- 44. The applicant has provided segregated information on both technical and formulation form of the product. The volume for formulation has been provided at the level of equivalent of technical volume. The Authority has considered production and capacity utilization in respect of technical form since the primary production activity is in production of technical, and processing of technical into formulation is a mere incremental production process.

45. The applicant has sold both technical and formulation form in the domestic market, and market share of the domestic industry has been calculated considering both technical and formulation form of the product. The volume information of thiram formulation has been brought in equivalent to thiram technical using the actual per unit consumption norms of technical in production of formulation. Profits, cash profits, profit before interest and tax, return on investment and inventories have been considered by considering both the products. The following table represents the share of thiram technical in per unit of thiram formulation produced by the domestic industry.

SN	Concentration	2020-21	2021-22	2022-23	POI
1	Total thiram technical consumption in formulation	***	***	***	***
2	Total thiram formulation production (Actual)	***	***	***	***
3	Proportion of thiram technical per unit of formulation	***	***	***	***

46. On the submission that the domestic industry has included formulation in order to show higher losses, it is seen that the domestic industry has suffered losses in both technical and formulation form of the product, and therefore, the contention that formulation has been included to escalate the losses is incorrect. Further, on the submission that the cost of technical has been inflated by including costs associated with the formulation process, the Authority has verified the data provided by the domestic industry. The Authority has satisfied itself that such records are in accordance with the generally accepted accounting principles and reasonably reflect the costs associated with the production and sale of the product under consideration.
47. The submissions made by interested parties with regard to injury and causal link which have been considered relevant by the Authority are examined and addressed as under.

a. Assessment of Demand/ Apparent Consumption

48. The Authority has determined the demand or apparent consumption of the product in India as the sum of domestic sales of the applicant, actual sales of supporters and the import from all sources. The domestic sales of the applicant and supporters have been considered as equivalent of technical form. The other suppliers of the formulation are producing formulation either from the imported or domestically sold technical. If the sales of the formulation of these entities are included, it would lead to double accounting. Therefore, formulation sales of these producers have not been considered.

SN	Particulars	UOM	2020-21	2021-22	2022-23	POI
1	Sales of the domestic industry	MT	***	***	***	***
	Trend	Index	100	81	117	114
2	Sales of supporter	MT	***	***	***	***
	Trend	Index	100	251	259	191
3	Subject country import	MT	935	827	864	810
4	Other countries import	MT	-	-	-	-
5	Total demand	MT	1318	1253	1408	1,298
	Trend	Index	100	95	107	98

49. It can be seen that the demand for the product declined in 2021-22, further increased in 2022-23, but declined again in the period of investigation.

b. Volume effect of dumped imports

50. With regards to the volume of dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to

production or consumption in India. The table below shows the volume of imports from the subject country.

SN	Particulars	UOM	2020-21	2021-22	2022-23	POI
1	Subject imports	MT	935	827	864	810
2	Other imports	MT	-	-	-	-
3	Total imports	MT	935	827	864	810
4	Subject country import in relation to					
A	Indian Production	%	144%	125%	82%	93%
	Trend	Index	100	86	57	64
B	Indian Demand	%	71%	65%	60%	62%
	Trend	Index	100	92	85	88
C	Total Imports	%	100%	100%	100%	100%

51. The imports from the subject country declined in 2021-22, increased marginally in 2022-23 but have declined again in the period of investigation. It is seen that the imports in relation to production and demand declined in 2021-22, further, declined in 2022-23 but increased again in the period of investigation. The imports maintain a significant proportion of domestic production and demand.

c. Price effect of dumped imports

52. With regard to the effect of the dumped imports on the prices, it is required to be analyzed whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like products in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices or prevent the price increase, which otherwise would have occurred in the normal course. Further, the Authority is required to consider the impact of the dumped imports on the prices of the domestic industry by examining price suppression/ depression effects, if any.

i. Price undercutting

53. The Authority had notified the thiram technical and thiram formulation as two PCNs. Since PCNs have been adopted, PCN wise undercutting has been determined. There are no imports of thiram formulation and therefore, undercutting has been determined only for thiram technical.

54. The table below shows price undercutting over the period of investigation.

SN	Particulars	UOM	POI
1	Selling price	₹/MT	***
2	Landed price	₹/MT	***
3	Price undercutting	₹/MT	***
4	Price undercutting	%	***
5	Price undercutting	Range	15-25%

55. It is seen that the landed price of the imports is far below the selling price of the applicant resulting in positive price undercutting despite the applicant selling the product at losses.

56. The Authority has also examined the importer's data which shows a significant volume of imports from***, an exporter that has not cooperated in the investigation. The CIF price of these imports Rs *** per MT (Landed price Rs ***) is substantially lower than the domestic purchase price Rs *** per MT, confirming price undercutting. The Authority also notes that the importer itself is procuring from both foreign and domestic sources, but the volume of imports is far higher than purchases from

the domestic industry [*** MT vs. ***MT], confirming the preferential sourcing from cheaper dumped imports.

ii. Price suppression and depression

57. The table below shows the information on changes in cost and selling price of **thiram technical**.

SN	Particulars	UOM	2020-21	2021-22	2022-23	POI
1	Cost of sales	Rs/MT	***	***	***	***
2	Change	Rs/MT		(***)	***	(***)
3	Trend	Indexed	100	85	120	112
4	Selling price	Rs/MT	***	***	***	***
5	Change	Rs/MT		***	(***)	(***)
6	Trend	Indexed	100	150	137	134

- The data shows that in 2021–22, the selling price of Thiram Technical ₹***/MT exceeded its cost of sales ₹***/MT, resulting in a profitable year for the domestic industry. However, in subsequent years, this trend reversed.
- In 2022–23, the cost rose sharply to ₹***/MT, while the selling price fell to ₹***/MT.
- In the Period of Investigation (POI), the cost remained high at ₹***/MT, while the selling price further declined to ₹***/MT.
- This trend indicates that while the domestic industry was able to cover its costs and earn profits in 2021–22, it experienced significant price suppression and depression in 2022–23 and POI, when increasing costs could not be matched with proportional increases in prices.

58. The table below shows the information on changes in cost and selling price of **thiram formulation**.

S N	Particulars	UOM	2020-21	2021-22	2022-23	POI
1	Cost of sales	Rs/MT	***	***	***	***
2	Change	Rs/MT		***	***	***
3	Trend	Indexed	100	114	128	139
4	Selling price	Rs/MT	***	***	***	***
5	Change	Rs/MT		***	(***)	(***)
6	Trend	Indexed	100	129	122	118

A similar trend is observed in Thiram Formulation:

- The domestic industry earned some profits in 2020-21.
- Further, in 2021–22, the selling price ₹***/MT was well above the cost of sales ₹***/MT, indicating a period of profitability.
- However, in 2022–23, the cost rose to ₹***/MT, while the price dropped to ₹***/MT.
- In the POI, while the cost increased further to ₹***/MT, the selling price declined to ₹***/MT, falling below cost.
- The analysis shows that the price suppression and depression were not constant throughout the injury period. The domestic industry earned profits in 2020-21 & 2021–22, but the inability to maintain price levels thereafter, particularly in the POI, demonstrates inability to raise prices in line with costs and actual decline in prices during the latter part of the injury period indicating price suppression and depression in the POI.

d. Economic parameters**i. Capacity, production, capacity utilization and domestic sales**

59. The table below shows the information on capacity, production, capacity utilization and domestic sales over the injury period.

SN	Particulars	UOM	2020-21	2021-22	2022-23	POI
1	Installed capacity of technical	MT	***	***	***	***
	Trend	Index	100	100	100	100
2	Production of technical	MT	***	***	***	***
	Trend	Index	100	59	151	135
3	Capacity utilization of technical plant	%	***	***	***	***
	Trend	Index	100	59	151	135
4	Technical transferred to formulation	MT	***	***	***	***
	Trend	Index	100	29	119	118
5	Production of formulation (Equivalent of technical)	MT	***	***	***	***
	Trend	Index	100	70	106	95
6	Domestic sales of technical	MT	***	***	***	***
	Trend	Index	100	213	304	323
7	Domestic sales of formulation (Equivalent of technical)	MT	***	***	***	***
	Trend	Index	100	65	95	89
8	Total sales	MT	***	***	***	***
	Trend	Index	100	81	117	114

60. It is seen that the applicant alone has capacity sufficient to cater the entire demand in the country. The capacity has remained constant over the injury period. It is also seen that the production of the applicant declined in 2021-22, increased in 2022-23 but has declined in the period of investigation.
61. The capacity utilization declined in 2021-22, increased in 2022-23 but has declined again in the period of investigation. The capacity utilization of the applicant is abysmally low. The domestic sales of the domestic industry declined in 2021-22, increased in 2022-23 and declined in the period of investigation.

ii. Market share

62. The information on the market share of different entities is given below: -

SN	Market share of	UOM	2020-21	2021-22	2022-23	POI
1	Domestic industry	%	***	***	***	***
	Trend	Index	100	85	109	115
2	Supporter	%	***	***	***	***
	Trend	Index	100	264	243	194
3	Indian industry	%	29%	34%	39%	38%
	Trend	Index	100	117	133	130
3	Subject country import	%	71%	66	61	62%
	Trend	Index	100	93	86	88

63. The market share of the domestic industry declined in 2021-22, increased in 2022-23 but has declined again in the period of investigation. The market share of the Indian industry increased till 2022-23 but has declined in the period of investigation. The market share of the imports declined till 2022-23 but has increased again the period of investigation. The Indian industry has sufficient capacity to cater the entire demand in the country but the Indian industry's share has reached a maximum of 40% during the injury period.

iii. Inventories

64. The inventory position with the domestic industry over the injury period is given in the table below:

SN	Particulars	UOM	2020-21	2021-22	2022-23	POI
1	Opening inventory	MT	***	***	***	***
2	Closing inventory	MT	***	***	***	***
3	Average inventory	MT	***	***	***	***
4	Trend	Index	100	97	97	125

65. It is seen that the inventory with the domestic declined up to 2022-23 but has increased in the period of investigation.

iv. Profitability, cash profit and return on capital employed

66. The performance of the domestic industry has been examined in respect of profitability, profits, cash profits, PBIT, and return on investment.

SN	Particulars	UOM	2020-21	2021-22	2022-23	POI
1	Profit/(Loss)	₹/MT	***	***	***	***
	Trend	Index	100	572	-115	-352
2	Profit/(Loss)	₹ Lacs	***	***	***	***
	Trend	Index	100	461	-135	-400
3	PBIT	₹ Lacs	***	***	***	***
	Trend	Index	100	224	23	-53
4	Cash Profit	₹ Lacs	***	***	***	***
	Trend	Index	100	389	-27	-222
5	ROCE	%	***	***	***	***
	Trend	Index	100	176	16	-37

67. It is seen that the domestic industry was in profits in the 2020-21. The performance improved in the 2021-22 when the import volume declined. As the imports increased in 2022-23, the profitability declined and the domestic industry suffered losses. The situation has intensified in the period of investigation as the losses have increased sharply.

68. It is also seen that while the domestic industry recorded cash profits till 2021-22, it has suffered cash losses in 2022-23 which have increased in the period of investigation. The domestic industry had positive return on capital employed till 2022-23 but it has turned negative in the period of investigation.

69. The Authority considers that the fact that the domestic industry has suffered cash losses and negative return on capital employed shows that the losses suffered are not due to any idle capacity.

v. Employment, wages and productivity

70. Employment, wages and productivity of the domestic industry over the injury period are given in the table below:

SN	Particulars	UOM	2020-21	2021-22	2022-23	POI
1	No of employees	Nos	***	***	***	***
	Trend	Index	100	104	98	100
2	Salary & Wages	₹ Lacs	***	***	***	***
	Trend	Index	100	106	120	132
3	Productivity per day	MT/Days	***	***	***	***
	Trend	Index	100	65	128	115
4	Productivity per employee	MT/Nos	***	***	***	***
	Trend	Index	100	62	130	115

71. It is seen that the number of employees has remained at almost same level in the injury period. The salary and wages have increased over the injury period. The productivity declined in 2021-22 but has improved in 2022-23 and further declined in the period of investigation.

vi. Growth

72. The growth of the domestic industry in terms of capacity, production, domestic sales volume, PBT, PBIT, cash profits and the return on capital employed is as per given table below:

SN	Particulars	Unit	2021-22	2022-23	POI
1	Production	Y/Y	-41%	155%	-10%
2	Sales	Y/Y	-19%	45%	-2%
3	Market share	Y/Y	-10%	27%	-1%
4	Profit/loss	Y/Y	361%	-120%	-205%
5	Cash profit	Y/Y	289%	-107%	-735%
6	ROCE	Y/Y	76%	-91%	-335%
7	Inventory	Y/Y	-3%	1%	29%

73. It is seen that the domestic industry has recorded a negative growth in all the parameters in the period of investigation.

vii. Magnitude of dumping

74. The magnitude of dumping is an indicator of the extent to which the imports are being dumped into India. The investigation has shown that the dumping margin is positive and significant in the period of investigation.

viii. Ability to raise capital investment

75. The applicant has experienced substantial negative growth across price indicators. The parameters have remained well below the expected levels, resulting in losses. Due to underutilization of its current production capacity and ongoing financial losses, the applicant's ability to raise capital investment has been adversely affected.

ix. Factors affecting domestic prices

76. As outlined above, the applicant has been unable to sell at profitable prices. The dumped imports are undercutting the applicant's pricing, forcing them to sell below their production cost. Consequently,

these imports have prevented the applicant from setting prices necessary to sustain its business operations.

H. NON-ATRIBUTION ANALYSIS

77. As per the Rules, the Authority, inter alia, is required to examine any known factors other than the dumped imports which are injuring or are likely to cause injury to the domestic industry, so that the injury caused by these other factors may not be attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, inter alia, the volume and prices of imports not sold at dumped prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and the domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry. It has been examined below whether the factors listed under the Rules could have contributed to the injury suffered by the domestic industry.

a. Volume and price of imports from third countries

78. It is seen that entire imports of the subject goods are entering India from the subject country. There are no imports from any other country in the period of investigation.

b. Contraction in demand

79. While the demand for the product has fluctuated slightly over the injury period, it has remained at broadly the same level. Therefore, a decline in demand cannot be a cause of injury.

c. Changes in the pattern of consumption

80. There has been no known material change in the pattern of consumption of the product under consideration.

d. Trade restrictive practices

81. No interested parties have produced any evidence relating to any known trade restrictive practice, which could have caused injury to the domestic industry.

e. Development of technology

82. The Authority notes that the technology for the production of the subject goods has not undergone any change. Hence, development in technology has not caused injury to the domestic industry.

f. Export performance

83. It is noted that the domestic industry has not exported the subject goods during the injury period. Therefore, export performance is not the cause of injury to the domestic industry.

g. Performance of other products

84. The Authority has considered data relating to the performance of the subject goods only. Therefore, the performance of the other products produced and sold by the domestic industry is not a possible cause of injury to the domestic industry.

I. MAGNITUDE OF INJURY MARGIN

85. The Authority has determined the non-injurious price for the domestic industry on the basis of principles laid down in the Rules read with Annexure III. The non-injurious price has been determined by adopting the information/data relating to the cost of production provided by the domestic industry. The non-injurious price has been compared with the landed price of the product under consideration from the subject country for calculating the injury margin. For determining the non-injurious price,

the best utilization of the raw materials and utilities and the best utilization of production capacity has been considered. It is ensured that no extraordinary or nonrecurring expenses were charged to the cost of production. A reasonable return (pre-tax @ 22%) on average capital employed (i.e., average net fixed assets plus average working capital) for the PUC was allowed as pre-tax profit to arrive at the non-injurious price. The NIP so determined has been considered for calculating injury margin.

86. Based on the landed price and NIP determined as above, the injury margin for the producer/exporter as determined by the Authority is provided in the table below:

SN	Particulars	Non-injurious price	Landed price	Injury margin		
		USD/MT	USD/MT	USD/MT	%	Range
1	Any producer	***	***	***	***	25-35

J. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

J.1 Submissions of other interested parties

87. The following submissions have been made by the other interested parties with regards to public interest:
- Market potential of this product is huge as compared to the current demand in India. Therefore, the duties are not in the interest of Indian farmers.
 - To understand the impact on the farmers, it is essential to understand real requirements of seeds per acre. For example, around 3500 KGs of Potato seeds will be required per acre. This implies that cost of Thiram Formulation will be around Rs. 1750 per acre (3500*.50). Considering 20% anti-dumping duties on Thiram Formulation addition cost to farmers will be Rs. 350 per acre. As per the available information, minimum support price for Potato in Uttar Pradesh is Rs. 650 per 100 Kgs of potato.
 - As per the label demand of 34000 for the subject goods, the capacity with the applicant industry is very miniscule.
 - The duties would not be in public interest due to the fact that the subject goods are used as an essential commodity by farmers and therefore, any additional burden of duties will have very significant adverse impact on the large population.
 - While imposing the duties, the interest of downstream industry and ultimate users needs to be considered for the overall growth of the nation.
 - There are other viable substitutes available in the market. In case the price of formulation increases, the farmer will purchase other substitutes.
 - Thiram plays a key role in protecting seeds from soil. If anti-dumping duty is imposed, the farmers may ignore the use of thiram which will cause huge loss to crop yield.

J.2 Submissions of the domestic industry

88. The following submissions have been made by the domestic industry with regards to public interest:
- For crop protection, thiram is usually applied as a fungicide to prevent various fungal diseases. Farmers usually apply 1-2 litres of thiram per hectare. The impact of a 30% antidumping duty will be only 15 paise on a seed packet of Rs 50 per kg. This fact has also been accepted by user industry and association during oral hearing.

- b. The applicant has not only sufficient capacity to meet the entire Indian demand during the period of investigation but become a global supplier.
- c. According to the domestic industry's estimates, around 35-40 kg of potatoes can be grown from 1 kilogram of seed potatoes. It may also be considered that thiram formulation as fungicide alone has very low application in potato seeds.
- d. The applicant being established in the same national territory as the consumers, will keep the consumer's interest in mind.
- e. Public interest does not limit itself to consumer industry's interest alone and is a much wider term, which covers in its ambit the interest of the applicant and the ultimate public at large.
- f. The imposition of the anti-dumping measures on imports of the product under consideration would be in the interest of the domestic producers and consumers.
- g. Anti-dumping duty is not a protection to the industry, but rather a remedial tool to bring fair market competition in the country.
- h. The users have not provided any evidence to demonstrate that the imposition of duty will lead to increase in cost.
- i. The purpose of anti-dumping law was well recognized, appreciated and stated by the Hon'ble Supreme Court in the matter of Reliance Industries Ltd. Versus Designated Authority [case number 2006 (202) E.L.T. 23 (S.C.)].

J.3 Examination by the Authority

89. The Authority considered whether imposition of the recommended anti-dumping duty will be against public interest. This determination is based on consideration of information on record and interests of various parties including the domestic industry, foreign producers and consumers.
90. The Authority issued gazette notification inviting views from all the interested parties, including importers, consumers and other interested parties. The Authority also prescribed a questionnaire for the users to provide the relevant information with regard to the present investigation, including possible effect of the anti-dumping duty on their operation. The Authority sought information on, inter-alia, interchangeability of the product supplied by the various suppliers from different countries, ability to switch sources, the effect of the anti-dumping duty on the consumers, the factors that are likely to accelerate or delay the adjustment to the new situation caused by the imposition of the anti-dumping duty.
91. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duty, in general, is to eliminate injury caused to the domestic industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market.
92. The Authority further notes that imposition of anti-dumping duty does not restrict imports. Imports will continue to happen at fair prices. Anti-dumping duty ensures that the imports are entering the Indian market at fair prices and a level playing field is maintained between the foreign exporters and the applicant.
93. The Authority prescribed an Economic Interest Questionnaire and invited submissions from all interested parties. Among the respondents, only the domestic industry submitted quantified information on the likely impact of the proposed anti-dumping duty on farmers in the questionnaire. The Authority notes the submission of the domestic industry that in the treatment of 1 kg of seed, only 2–2.5 grams of the product under consideration is used. At prevailing prices, the cost of 2 grams

of Thiram is estimated at less than ₹0.50, and the imposition of an anti-dumping duty of 30% would raise the cost by approximately ₹0.15 per kg of seed. The other interested parties have not disputed the above contention of the domestic industry.

94. In its written submission, the importer has attempted to illustrate the impact of anti-dumping duties by citing an example related to potato cultivation. It has been submitted that the use of Thiram formulation for seed treatment would result in an additional cost of ₹350 per acre due to a 20% anti-dumping duty. However, the importer has not provided any supporting evidence or documentation to substantiate the agronomic assumptions used in its calculation—such as seed requirement per acre, Thiram dosage levels, or the treatment cost structure.
95. Accordingly, the Authority concludes that the imposition of anti-dumping duty would not materially affect the cost structure of farming operations. On the contrary, the duty is necessary to ensure the long-term availability of Thiram at fair prices, maintain the viability of domestic producers, reduce over-dependence on imports, and ensure supply stability for an essential agrochemical used in seed treatment. The Authority, therefore, finds that the proposed anti-dumping duty is not against public interest, and aligns with the broader objective of safeguarding fair competition without imposing any undue burden on Indian farmers.

K. POST DISCLOSURE COMMENTS

K.1 Submissions by other interested parties

96. The following comments to the disclosure statement have been filed by the other interested parties.
- i. The Authority has not dealt with the report by the Panel adopted by the Committee on Subsidies and Countervailing Measures on 28 April 1992 - Concerning Wine and Grape Products - United States. Both Thiram Technical and Thiram Formulation are not technically as well as commercially substitutable and can they be considered as like articles.
 - ii. The Authority had also not dealt with our submissions that two-way substitutability is necessary for considering product as like article, as done by the Authority in various final findings.
 - iii. The Authority has also not provided the law or jurisprudence which provide power to the Hon'ble Authority to include products in the product under consideration on the pretext of circumvention of the duties in the original/ fresh investigation.
 - iv. The Authority has not made any analysis relating to loss of sales due to viable substitutes available in the Indian market, since availability of substitutes have direct impact on the Causal Link as well as injury determination.
 - v. The Authority is requested to confirm whether freight is included in the net sales realization or not, whether freight is not included in both, cost of sales as well as selling price.
 - vi. The Authority is requested to confirm that data of Formulation is also considered in the analysis.
 - vii. The import prices are much higher than the cost of the Domestic Industry and therefore, the Authority should recommend non-imposition of the duties in the interest of downstream users.

K.2 Submissions by the applicant.

97. The following comments on the disclosure statement have been filed by the applicant.
- i. Allocating expenses between the two forms based on production value is not appropriate since value of thiram technical is also included in the value of formulation.

- ii. While the Authority has acknowledged that technical to formulation is not a significant process, the production process from technical to formulation is a mere incremental process. However, the Authority has allocated expense based on production value ratio. The disclosure statement is based on different standards for determination of product under consideration and for determination of non-injurious price.
- iii. While average production hours of 1 MT of thiram is *** hrs. The same in case of formulation is only *** hrs. Because the major production hours are incurred in production of thiram technical, major costs are associated in thiram technical. Considering production value as an appropriate ratio has resulted in unduly low cost of thiram technical.
- iv. In the verification papers filed, applicant provided evidence of actual production hours. These pertained to post period of investigation. The documents for the period of investigation could not be shown at the time of physical verification, as these documents are now in possession of other Government department.
- v. The fact that relevant records for the period of investigation could not be shown at the time of physical verification is no limitation to adoption of production hours. Production hours can be determined even from the records for the subsequent period. It is not a case that the production hours consumed in the period of investigation would have been different from production hours consumed in post period of investigation
- vi. Considering production value as a ratio has resulted in a reduced manufacturing cost by atleast by Rs *** per MT.
- vii. The Authority has allocated fixed assets between thiram technical, and formulation based on production value. The approach is inconsistent with Authority's view in the disclosure wherein it has been held that major plant and equipment and investments are involved in thiram technical.
- viii. The DGTR has calculated a production value ratio of *** % in case of thiram technical. However, this production value ratio is low. The production value ratio should be at least ***%. Production value ratio determined is low due to incorrect value of production value for captively transferred input
- ix. Raw materials consumption ratio is more appropriate than production value ratio. This is due to the fact that prices of technical are highly suppressed due to dumping of the product in the country.
- x. From the non-injurious price disclosed, LPG cost has been allocated between thiram technical and thiram formulation. LPG cost cannot be allocated to formulation. Entire LPG cost is required to be charged to technical only.
- xi. While the applicant has suffered material injury, the user industry has taken undue benefit of low-priced imports and earned significant profits. Since the applicant is finding it difficult to sell Thiram Technical in the domestic market, its production is impacted leading to high costs. This is leading to high costs for thiram formulation as well. The applicant again competes with other formulators who have access to low cost thiram technical and is finding challenges in selling Formulation at remunerative prices

K.3 Examination by the Authority

98. The Authority has examined the post-disclosure submissions made by the interested parties. It is observed that the majority of these submissions are reiterations of arguments and contentions that have already been examined and addressed to the extent deemed necessary in the relevant paragraphs of these final findings. For the sake of brevity, the Authority has refrained from repeating responses to such comments in this post-disclosure examination. However, any new submissions raised for the

first time in the post-disclosure submissions, as well as those previously addressed but deemed necessary to examine further are addressed hereunder.

99. With regard to comments on technical and commercial substitutability, the Authority notes that thiram technical is the essential active ingredient used in the manufacture of thiram formulation. The two are intrinsically linked in the production chain. Without thiram technical, thiram formulation cannot be produced and thiram technical has no other use than in production of thiram formulation. Inclusion of formulation form is additionally important and necessary considering the fact that process of conversion from Technical to Formulation is merely incremental.
100. With regard to comments that the loss of domestic sales is due to availability of the other substitutable product in the domestic market, the Authority notes that the import volume of the product under consideration from the subject country are significant when seen in comparison to the demand in the country. With such high volume of imports and low domestic sales of the domestic industry, it cannot be considered that the loss of domestic sales is due to availability of other substitutable products. It is also noted that though interested parties provided a list of substitutable products, the domestic industry contended that most products are not commercially produced in the country and the price of these products are much higher than the product under consideration. The interested parties have provided no evidence of existence of technical and commercial substitutability between these products. Therefore, the Authority found no merit in the contention made by the other interested parties.
101. As regards the comments whether freight cost is part of net sales realization, the disclosure statement issued expressively mentions that while selling price has been considered for evaluating suppression/depression, price undercutting has been calculated considering net selling price. Expenses such as freight, discount and commission, to the extent applicable, have been excluded for calculation of net selling price.
102. As regards methodology adopted by the authority for determination of NIP, it is noted that the domestic industry has adopted different allocation methodology for various expenses i.e. production hours ratio for expenses upto manufacturing expenses, sales value ratio for post manufacturing expenses, etc. During on-site verification, the domestic industry could not substantiate its claim in respect of production hours with supporting evidence. Therefore, the authority has adopted production value ratio for allocation of common expenses upto manufacturing, which is the most appropriate methodology consistently applied. It may be noted that the domestic industry had claimed post manufacturing expenses for the PUC by allocating common expenses based on sales value ratio which they themselves have admitted that they have calculated wrongly on lower side. All the contentions in respect of allocation of expenses raised by the domestic industry, has been appropriately addressed as per the consistent practice of the Authority.

L. CONCLUSION

103. Having regard to the contentions raised, information provided, and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority, as recorded in the above findings, and on the basis of above analysis of the dumping, injury and causal link to the domestic industry, the Authority concludes as follows:
 - a. The product under consideration is Thiram in any form, including its technical and formulation form. The scope of the product includes thiram technical and thiram formulation. All forms of thiram are within the scope of the product under consideration.

- b. While the product under consideration has been imported in technical form, it has been consumed in formulation form only. There has been no consumption of technical form as such. Conversion of technical to formulation form is merely an incremental process. Thiram technical and Thiram formulation are not distinct products, but simply different stages of the same product.
- c. The product supplied by the domestic industry is a like article to the imported product.
- d. The applicant constitutes 'domestic industry' within the meaning of Rule 2(b) of the Rules. Apart from applicant, there are two other producers of the product under consideration. Both have supported the present investigation.
- e. The application satisfies the criteria of standing in terms of Rule 5(3). Production of the applicant constitutes a major proportion in the total Indian production.
- f. None of the exporters from European Union has participated in the investigation. Therefore, the normal value has been determined based on the facts available. Export price has been determined on the basis of DG systems data, and facts available with regard expenses incurred upto ex-factory level of the exporters.
- g. Considering the normal value and export price for the subject goods, the dumping margin for the subject goods from the subject country has been determined. It is seen that dumping margin is significantly positive. It is thus established that the imports of the product under consideration have entered the Indian market at significantly dumped prices.
- h. The imports from European Union hold majority share in the Indian consumption, despite no demand-supply gap in India. Further, these imports are quite significant in relation to production in India. The imports constitute 100% of the imports of the product in the country.
- i. Even when Indian industry holds capacities sufficient to cater to the entire Indian demand, imports command majority share in the Indian consumption.
- j. The landed price of Thiram technical is materially below the selling price of the domestic industry.
- k. Over the injury period, the increase in selling prices has not been in line with the increase in the cost of sales and the domestic industry's prices are suppressed.
- l. Production, capacity utilization, and domestic sales of the domestic industry remained abysmally low during the entire injury period despite significant demand in the Country, owing to majority share held by the dumped imports.
- m. The availability of imported technical form at dumped prices has adversely impacted the domestic industry's both sales and prices of formulation.
- n. Performance of the domestic industry has steeply declined in respect of profits, cash profits, and return on investment over the injury period. The domestic industry has suffered financial losses, cash losses and negative return on capital employed in the investigation period.
- o. Domestic industry has recorded negative growth in both volume and price parameters over the injury period.
- p. The Indian industry has sufficient capacity to cater the entire demand in the country but the Indian industry's share has reached a maximum of 40% during the injury period, with dumped imports holding majority share.
- q. The investigation has not shown any other factor which could have caused injury to the domestic industry.
- r. The applicant competes with other formulators who have access to low cost thiram technical. Access to dumped imports has adversely impacted the operations of domestic industry in respect of formulation as well.
- s. The domestic industry has suffered losses in both technical and formulation form of the product individually and collectively.

- t. Despite the issuance of an economic interest questionnaire, consumers of the product have not provided any quantification of how imposition of proposed anti-dumping duty would adversely impact the downstream industry and public at large.
- u. The domestic industry quantified impact of proposed duty and demonstrated that the imposition of anti-dumping duty would have an insignificant impact on end consumer and public at large.
- v. Given the nature of the product, industry and the extent of the injury caused by dumped imports, the Authority considers the imposition of anti-dumping duty for a period of five (5) years would not be against public interest, and is necessary and appropriate.

M. RECOMMENDATION

104. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the domestic industry, exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspect of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted the investigation into dumping, injury and causal link in terms of the provisions laid down under the Anti-Dumping Rules, the Authority is of the view that imposition of duty is required to offset dumping and injury. Therefore, the Authority considers it necessary and recommends the imposition of anti-dumping duty on imports of the subject goods from the subject countries.
105. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends the imposition of an anti-dumping duty equal to the lesser margin of dumping and the margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, the Authority recommends imposition of anti-dumping duty on the imports of the subject goods, originating in or exported from subject country for a period of 5 years from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, equal to the amount mentioned in Col. 7 of the duty table appended below.

Duty Table

SN	Heading/ subheading*	Description of the goods	Country of origin	Country of export	Producer	Amount	UOM	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)
1	3808 92 30	Thiram in any form	European Union	Any country including European Union	Any	733	MT	US\$
2	-do-	-do-	Any country other than European Union	European Union	Any	733	MT	US\$

**The Customs classification is indicative only and not binding on the scope of the product under consideration.*

N. FURTHER PROCEDURE

106. An appeal against the order of the Authority arising out of the final findings shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

DARPAN JAIN, Designated Authority